Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 48

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

30 नवम्बर 2017 ई. 11 रबीउल् अव्वल 1439 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

वह ऐसा निर्जन स्टेशन था कि बैठने के लिए चारपाई भी नहीं मिलती थी और न खाने का प्रबन्ध हो सकता था किन्तु भविष्यवाणी पूरी होने पर मुझे इतनी प्रसन्नता हुई कि जैसे इस स्थान में किसी ने हमें भोजन पर बुलाया है जैसे हर प्रकार का स्वादिष्ट भोजन हमें प्राप्त हो गया।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

94. चौरानवे वां निशान - एक बार मैं लुधियाना से क़ादियान के लिए रेलगाड़ी में चला आ रहा था तथा मेरे साथ शेख़ हामिद अली मेरा सेवक तथा कुछ अन्य लोग भी थे। जब हम कुछ दूरी तय कर चुके तो थोड़े सी ऊंघ हो कर मुझे इल्हाम हुआ -نصف ترا نصف عمالیق را

और साथ ही हृदय में डाला गया कि यह विरासत का भाग है जो किसी वारिस की मृत्यु से हमें मिलेगा तथा हृदय में डाला गया कि अमालीक़ (عمالیق) से अभिप्राय मेरे चचेरे भाई हैं जो विरोध भी रखते थे और क़द के भी लम्बे थे, जैसे ख़ुदा ने मुझे मूसा ठहराया और उन्हें मूसा के विरोधी। जब मैं क़ादियान में पहुँचा तो ज्ञात हुआ कि हमारे भागीदारों में से इमाम बीबी नामक एक स्त्री अतिसार से रोगग्रस्त है। अत: उसका कुछ दिनों के पश्चात् निधन हो गया तथा हम दोनों पक्षों के अतिरिक्त उसका कोई वारिस नहीं था। इसलिए उसकी भूमि में से आधीतो हमारे भाग में आई और आधी भूमि हमारे चचरे भाइयों के भाग में गई। इस प्रकार से वह भविष्यवाणी पूर्ण हो गई जिसके पूर्ण होने तथा वर्णन करने पर एक जमाअत साक्षी है तथा शेख़ हामिद अली भी जो जीवित मौजूद है।

95. पचानवे वां निशान - एक बार मुझे लुधियाना से पटियाला जाने का संयोग हुआ और मेरे साथ वही शेख हामिद अली तथा दूसरा व्यक्ति फ़तह खान नामक निवासी एक गांव टांडा से संलग्न ज़िला होशियारपुर तथा तीसरा अब्दुर्रहीम नामक निवासी अम्बाला छावनी था तथा कुछ और भी थे जो याद नहीं रहे। जिस सुबह हमने रेल पर सवार होना था मुझे इल्हाम द्वारा बताया गया था कि इस यात्रा में कुछ हानि होगी तथा कुछ कष्ट भी। मैंने अपने उन समस्त सहयात्रियों को कहा कि नमाज़ पढ़ कर दुआ कर लो क्योंकि मुझे यह इल्हाम हुआ है। अत: सब ने दुआ की और फिर हम रेल पर सवार हो कर हर प्रकार से सकुशल पटियाला पहुंच गए। जब हम स्टेशन पर पहुँचे तो रियासत के प्रधानमंत्री का ख़लीफ़ा मुहम्मद हसन अपनी रियासत के समस्त कर्मचारियों सहित जो संभवत: अठारह गाड़ियों पर सवार होंगे स्वागत के लिए उपस्थित थे। जब आगे बढ़े तो लगभग सात हज़ार के लगभग शहर निवासी सामान्य एवं विशेष भेंट करने के लिए मौजूद थे। इस सीमा तक तो सब कुछ ठीक रहा। न कोई हानि हुई और न कोई कष्ट, किन्तु जब वापस आने का इरादा हुआ तो वही मंत्री जी अपने भाई सय्यद मुहम्मद हुसैन साहिब सहित जो कदाचित इन दिनों काउंसिल के सदस्य हैं मुझे रेल पर सवार करने के लिए स्टेशन पर मेरे साथ गए तथा उनके साथ स्वर्गीय नवाब अली मुहम्मद ख़ान साहिब झज्जर वाले भी थे। जब हम स्टेशन पर पहुँचे तो रेल के चलने में कुछ देर थी। मैंने इरादा किया कि अस्र की नमाज़ यहीं पढ़ लूँ। इसलिए मैंने चोग़ा उतार कर वुज़ू करना चाहा और चोग़ा मंत्री जी के एक कर्मचारी को पकड़ा दिया और फिर चोग़ा पहन कर नमाज़ पढ़ ली। उस चौग़े में मार्ग के लिए कुछ रुपए थे और उसी में रेल का किराया भी देना था। जब टिकट लेने का समय आया तो मैंने जेब में हाथ डाला ताकि टिकट के लिए रुपए दूँ तो मालूम हुआ कि वह रुमाल जिसमें रुपए थे वह खो गया। मालूम होता है कि चोग़ा उतारते समय कहीं गिर पड़ा। परन्तु मुझे खेद के स्थान पर प्रसन्नता हुई कि भविष्यवाणी का एक भाग पूरा हो गया। फिर हम टिकट का प्रबंध करके रेल पर सवार हो गए। जब दोराहा स्टेशन पहुँचे तो कदाचित उस समय रात्रि के दस बजे का समय था और वहां रेल मात्र पांच मिनट के लिए ठहरती मेरे एक सहयात्री शेख़ अब्दुर्रहीम ने एक अंग्रेज़ से पूछा कि क्या लुधियाना आ गया? उसने चपलता से या अपनी किसी स्वार्थपरता से उत्तर दिया कि हां आ गया। तब हम अपने समस्त सामान के साथ शीघ्रता से उतर आए। इतने में रेल रवाना हो गई। उतरने के साथ ही एक निर्जन स्टेशन देख कर पता लग गया कि हमें धोखा दिया गया। वह ऐसा निर्जन स्टेशन था कि बैठने के लिए चारपाई भी नहीं मिलती थी और न खाने का प्रबन्ध हो सकता था किन्तु इस विचार से कि इस कष्ट के आने से भविष्यवाणी का दूसरा भाग भी पूरा हो गया। मुझे इतनी प्रसन्नता हुई कि जैसे इस स्थान में किसी ने हमें भोजन पर बुलाया है जैसे हर प्रकार का स्वादिष्ट भोजन हमें प्राप्त हो गया। उस के बाद स्टेशन मास्टर अपने कमरे से निकला। उसने खेद जताया कि किसी ने व्यर्थ में चंचलता आपको कष्ट पहुँचाया और कहा कि आधी रात को एक मालगाड़ी आएगी, यदि गुंजायश हुई तो मैं उसमें आप को बैठा दूँगा। तब हम आधी रात को सवार होकर लुधियाना पहुँच गए। जैसे यह यात्रा उसी भविष्यवाणी के लिए थी।

96. छियानवे वां निशान - एक बार स्वर्गीय अली मुहम्मद खान रईस लुधियाना ने मुझे पत्र लिखा कि मेरे कुछ आजीविका संबंधी मामले बन्द हो गए हैं आप दुआ करें ताकि वे यथावत् हो जाएं। जब मैंने दुआ की तो मुझे इल्हाम हुआ कि खुल जाएंगे। मैंने पत्र द्वारा उन्हें यह सूचना दे दी। अत: केवल दो चार दिनों के बाद वे आजिविका संबंधी मामले खुल गए और उन्हें बड़ी दृढ़ आस्था हो गई। फिर एक बार उन्होंने अपने कुछ गुप्त उद्देश्यों के संबंध में मेरी ओर एक पत्र प्रेषित किया तथा जिस पल उन्होंने वह पत्र डाक के सुपुर्द किया उसी पल मुझे इल्हाम हुआ कि इस विषय का पत्र उनकी ओर से आने वाला है। मैंने अविलम्ब उन्हें यह पत्र लिखा कि इस विषय का पत्र आप प्रेषित करेंगे। दूसरे दिन वह पत्र आ गया। जब मेरा पत्र उन्हें मिला तो वह आश्चर्यचकित रह गए कि यह परोक्ष की सूचना किस प्रकार मिल गई क्योंकि मेरे इस रहस्य की सूचना किसी को न थी। उनका विश्वास इतना बढ़ा कि वह प्रेम और निष्ठा में लीन हो गए तथा उन्होंने एक छोटी सी संस्मरण नोट बुक में वे दोनों उपरोक्त निशान लिख दिए तथा हमेशा उन्हें अपने पास रखते थे। जब मैं पटियाला गया और जैसा ऊपर उल्लेख किया गया है जब मंत्री सय्यद मुहम्मद हसन साहिब से भेंट हुई तो संयोग से वार्तालाप के क्रम में मंत्री जी और नवाब साहिब की मेरे अद्भुत एवं विलक्षण चमत्कारों के सम्बन्ध में चर्चा हुई तो स्वर्गीय नवाब साहिब ने एक छोटी सी नोट बुक अपनी जेब से निकाल कर मंत्री जी के समक्ष प्रस्तुत कर दी और कहा कि मेरे ईमान और श्रद्धा का कारण तो ये दो भविष्यवाणियाँ हैं जो इस नोट बुक में लिखी हैं। कुछ समय के बाद उनकी मृत्यु से कुछ दिन पूर्व जब मैं उनकी बीमारी का हाल पूछने के लिए लुधियाना में उनके मकान पर गया तो वह बवासीर के रोग से बहुत दुर्बल हो चुके थे तथा रक्त बहुत आ रहा था। इसी अवस्था में वह उठ बैठे और अपने अन्दर के कमरे में चले गए और वही छोटी नोट बुक ले आए और कहा कि यह मैंने बतौर प्राण रक्षा कवच के तौर पर रखी है तथा इसको देखने से मैं सन्तोष पाता हूँ तथा वे स्थान दिखाए जहाँ दोनों भविष्यवाणियाँ लिखी हुई थीं। फिर जब अर्ध रात्रि के लगभग या कुछ अधिक गुज़री तो उनका देहान्त हो गया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन। मैं विश्वास रखता हूँ कि वह नोट बुक अब तक उनके पुस्तकालय में होगी।

(हक़ीक़तुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 22, पृष्ठ 255-258)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का दौरा जर्मनी, अगस्त 2017 ई. (भाग -3)

उहदेदारों में भी नि:स्वार्थ सेवा की भावना होनी चाहिए।

☆ यह अल्लाह तआला का जमाअत पर विशेष कृपा व एहसान है कि नि: स्वार्थ सेवा करने वाले कार्यकर्ता अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा के लिए प्रस्तुत कर देता है।

☆कोई डॉक्टर है कोई इंजीनियर है कोई छात्र है कोई विभिन्न प्रकार का काम करता है कोई टैक्सी चला रहा होता है, तो यह सब जलसा सालाना में विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञों की तरह काम कर रहे होते है ।

*** सहायकों और काम करने वाले तो सेवा की भावना से काम करते हैं और निस्वार्थ होकर काम करते हैं लेकिन अधिकारियों में भी निस्वार्थ सेवा की भावना होनी चाहिए।**

☆उहदेदार भी आपस में अगर सहयोग और प्यार तथा स्नेह से और एक दूसरे को समझते हुए काम करेंगे तो उनके कार्यों में अधिक बरकत पड़ेगी।

☆जो बरकत पड़ती है वह उहदेदारों की क्षमताओं की वजह से नहीं पड़ती, अगर बरकत पड़ती है तो इसलिए कि अल्लाह तआला ने यह ज़िम्मा लिया हुआ है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा के लिए कार्यकर्ताओं को पैदा करना है।

☆ अत: आज मैं कार्यकर्ताओं को कुछ नहीं कहना चाहता, हमें जो ज़रूरत है वह यह है कि अधिकारी भी आपस में आपसी सहयोग से काम करें और यह सहयोग जो है वह काम में बरकत भी डालेगा और उन्हें भी इनाम के हकदार बनाएगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का जलसा सालाना जर्मनी के अवसर पर कार्यकर्ताओं तथा प्रबन्ध का निरीक्षण और ख़िताब

इस्लाम व्यर्थ उद्देश्यों से लड़ाई की अनुमति नहीं देता, सभी युद्ध और जंग का माहौल मक्का के कुफ्फार के द्वारा पैदा किया गया और मुसलमानों ने केवल उसका बचाव किया, मुसलमानों को कभी भी युद्ध शुरू करने की अनुमति नहीं दी गई।

यह केवल इस्लाम ही नहीं है जो आत्मरक्षा की अनुमति देता है बल्कि तौरात में भी पांच हज़ार से अधिक आयतें हैं, यहां तक कि इंजील में भी कुछ आयतें हैं जिसमें लिखा है कि जब तुम पर अत्याचार किया जाए तो उसका मुकाबला करो।

यही हमारा मिशन है कि हम ने इस्लाम का असल पैग़ाम फैलाना है और हम यह फैला रहे हैं, संस्थापक जमाअत अहमदिया ने कहा है कि अल्लाह तआला ने मुझे इस उद्देश्य के लिए भेजा है कि सारी दुनिया में इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं को फैलाओं और यही हमारा कर्तव्य है और हम इसे कर रहे हैं।

हमें अपनी सभी शक्तियों को काम में लाते हुए देश की बेहतरी के लिए प्रयास करना चाहिए, हमें देश के कानून का सम्मान करना चाहिए, हमें देश के हर नागरिक का सम्मान करना चाहिए, हमें इस देश की हर चीज़ का सम्मान करना चाहिए, यही मूल एकीकरण है ।

प्रेस और मीडिया के प्रतिनिधियों से हुज़ूर अनवर का इन्टरवियू

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

मेहमानों की प्रतिक्रियाएं

आज बैयतुस्समद के उद्घाटन समारोह में 267 मेहमान शामिल हुए जिनमें लॉर्ड मेयर, सांसद, मुख्यमंत्री के प्रतिनिधि के अलावा प्रदेश हीसन की विभिन्न सरकारी एजेंसियों और राजनीतिक जमाअतों के प्रतिनिधि, स्थानीय विधानसभा सदस्य, डॉक्टर, टीचर्स, वकील,पत्रकार और मेहमान तथा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से सम्बंध रखने वाले लोग शामिल थे। अधिकांश मेहमानयों ने अपनी भावनाओं और अभिव्यक्तियों को व्यक्त किया जो ख़लीफतुल मसीह के भाषण ने उनके दिल पर गहरा प्रभाव डाला है। कुछ मेहमानों की प्रितिक्रियाँ नीचे वर्णन की जा रही हैं ।

Mr Karl Heinz Funck जो गीज़न के प्रमुख हैं, ने कहा कि वह ख़लीफा के भाषण से बहुत प्रभावित हुए और भाषण में वर्णित सभी बिंदुओं से सहमत हैं और उनकी तकरीर की शैली बहुत ही शांत और प्रभावशाली है। ख़लीफा की बात से मुझे पहली बार पता चला कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ईसाइयों को अपनी मस्जिद में इबादत करने की ख़ुद अनुमति दी थी और इस्लाम की शिक्षाओं के ऐसे खुले हृदय से मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ।

Mrs Birgit Lesch Konig कहती हैं कि मेरी बेटी नीदरलैंड में रहती है और उसके दिल में मेरे किसी इस्लामी समारोह में शामिल होने के बारे में आज बहुत चिंताएं थी और उसने मुझे चेतावनी दी थी कि आप सावधान रहें लेकिन मैंने कहा कि माननीय इमाम जमाअत अहमदिया को मिलने का सिर्फ एक ही मौका मिला है जो मैं भी बर्बाद नहीं कर सकती मैं निश्चित रूप से जाऊंगी। आज मैंने यहां शांति और सुकून पाया है।

Mrs ओम विनटर, एक क्षेत्रीय कार्यालय प्रतिनिधि, ने कहा कि मैं महिलाओं के हिस्से में गई और उन का रख रखाव और धार्मिक मूल्यों के साथ समन्वय मुझे बहुत अच्छा लगा और आपकी महिलाएं समाज के साथ अच्छी तरह से वाकिफ थीं। माननीय इमाम जमाअत अहमदिया ने महिलाओं की गुणवत्ता में सुधार के बारे में बात की, जिससे मुझे ख़ुशी हो रही है कि आपकी जमाअत में मर्द तथा औरत को समान रूप से महत्वपूर्ण समझा जाता है।

Mr तुरान का कहना है कि इमाम जमाअत अहमदिया से मिल कर इनकी ज़ात के प्रभाव से मेरी तबीयत पर गहरा असर हुआ है और मेरी गहरी प्रतिक्रिया हुज़ूर को देख कर यह है कि हुज़ूर ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें इस्लाम का प्रमुख होना चाहिए।

डॉक्टर मूसा ने अपने विचार बताते हुए कहा कि ख़लीफा से मुलाकात करके मेरे शरीर और आत्मा ने आप के व्यक्तित्व के पवित्र प्रभावों को अनुभव किया है।

पृष्ठ 8 पर शेष

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला मोमिनों को फरमाता है कि तुम्हारा लक्ष्य हमेशा فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ (अल-बकरः 149) होना चाहिए अर्थात तुम नेकियों में हमेशा एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करो और फिर नेकियां करने वालों और नेक कर्म करने वालों को अल्लाह तआला बेहतरीन सृष्टि करार देता है।

नेकी क्या चीज़ है? वास्तविक भलाई कैसे प्राप्त की जा सकती है? नेकी करने के लिए ख़ुदा तआला पर ईमान क्यों आवश्यक है? ईमान की गुणवत्ता क्या होनी चाहिए? हमें इस ईमान की गुणवत्ता को कैसे बढ़ाना चाहिए? नेकी के कौन कौन से विभिन्न पहलो हैं? कितनी प्रकार की नेकियां हैं? एक मोमिन को अपनी नेकियों की सीमा को कैसे बढ़ाना चाहिए।? नेकियों की वास्तविकता, उसकी हिक्मत और उसकी रूह के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश के हवाले से ईमान वर्धक वर्णन।

आदरणीय हामिद मकसूद आतिफ साहिब (मुरब्बी सिलसिला),आदरणीय अली सईद मूसा साहिब (पूर्व अमीर तंज़ानिया) और आदरणीया नुसरत बेगम साहिब (आफ रब्वा) की वफात। मरहूमीन का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़े जनाज़ा गायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 27 अक्तूबर 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

अल्लाह तआला मोमिनों को फरमाता है कि तुम्हारा लक्ष्य हमेशा فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ (अल-बकरः 149) होना चाहिए अर्थात तुम नेकियों में हमेशा एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करो और फिर नेकियां करने वालों और नेक कर्म करने वालों को अल्लाह तआला बेहतरीन सृष्टि करार देता है जैसा कि वह फरमाता है, اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ (अल बय्यनह: 8) अर्थात वे लोग जो ईमान लाए और अच्छे कर्म किए यही हैं जो सबसे अच्छे प्राणी हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर इस बात को स्पष्ट करते हुए वर्णन करते हैं कि

"मनुष्य को अपना कर्तव्य और धर्म में प्रगति का भुगतान करना चाहिए।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 10 पृष्ठ 15 संस्करण 1 9 85, यूनाइटेड किंगडम)

इस आयत के बारे में आपने फरमाया। इसलिए नेक कर्मों में प्रगति करना, नेक काम करना नेकियां करना ही मुस्लमान को, एक मोमिन को वास्तविक मोमिन बना देता है और इसके लिए हमें हमेशा प्रयास करना चाहिए। हमारा मार्गदर्शन करने के लिए, कुरआन तथा हदीस के प्रकाश में, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बहुत स्पष्टीकरण के साथ इस बारे में बताया है। उदाहरण के लिए, नेकी क्या चीज़ है? वास्तविक नेकी कैसे प्राप्त की जा सकती है? नेकी करने के लिए ख़ुदा तआला पर ईमान क्यों आवश्यक है? ईमान की गुणवत्ता क्या होनी चाहिए? हमें इस ईमान की गुणवत्ता को कैसे बढ़ाना चाहिए? नेकी के कौन कौन से विभिन्न पहलो हैं? कितनी प्रकार की नेकियां हैं? एक मोमिन को अपने नेकियों की सीमा को कैसे बढ़ाना चाहिए।? फिर अल्लाह तआला ने अच्छे काम करने वालों को कैसे आशीर्वाद देता है? फिर आप ने यह भी वर्णन फरमाया कि जायज़ चीज़ों का भी मध्यम स्तर तक करना नेकी है। यदि इस से अधिक करो तो फिर नेकी में कमी कर देता है फिर एक मोमिन को अपनी नेकी की सीमा को किस प्रकार बढ़ाना चाहिए? सार यह कि आप ने नेकियों की हिक्मत, उनकी वास्तविकता और विभिन्न अवसरों पर विभिन्न दृष्टकिोणों के साथ उस की रूह को स्पष्ट रूप में वर्णन किया है। इस समय मैं इस बारे में आप के कुछ उद्धरण प्रस्तुत करूंगा। इस तथ्य को समझाते हुए कि नेकी क्या चीज़ है और यह भी कि ज़ाहिर में एक छोटी सी नेकी भी ख़ुदा तआला की ख़ुशी का कारण बना देती है। आप फरमाते हैं

"नेकी का एक स्तर इस्लाम और ख़ुदा तआला की ओर बढ़ना है।" (इस्लाम की वास्तविकता जानने के लिए, ख़ुदा तआला की इच्छा को प्राप्त करने के लिए, उस की निकटता प्राप्त करने के लिए, अच्छे कर्म उसके लिए स्तर हैं।) "लेकिन याद रखो कि नेकी क्या चीज़ है।" फरमाया कि,"शैतान प्रत्येक राह में लोगों की चोरी करता है और उन्हें रास्ते से बहकाता है उदाहरण के लिए खाना रात को अधिक पक गया था।" (अमीर आदमी या किसी के घर में रात में अधिक भोजन पक गया। रोटी अधिक पक गई।) "सुबह को बासी बच गई।" (खाई नहीं गई और अगले दिन) फरमाया कि " ठीक खाने के समय उसके सामने अच्छे अच्छे भोजन रखे हैं और अभी एक लुक्मा नहीं लिया कि दरवाज़े पर एक ग़रीब फकीर ने आवाज़ दी।"(तो उस खाने वाले ने) " कहा कि बासी रोटी मांगने वाले को दे दो।" " (कल की जो शेष रोटी थी वह उसे दे दो, यद्यपि ताज़ा भोजन तुम्हारे सामने पकाया गया था।) फरमाया कि" क्या यह नेकी होगी? बासी रोटी तो पड़ी रहनी थी नेअमते पसन्द करने वाले उसे क्यों खाने लगे?" आप फरमाते हैं," अल्लाह तआला फरमाता है। وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا (अद्दहर 9) "(फरमया कि)" यह भी ज्ञात रहे कि तआम पसंदीदा भोजन को कहते हैं।(अर्थात अच्छा खाना उसे कहा जाता है जो पसन्द हो।)"सड़ा हुआ बासी "तआम" नहीं कहलाता।" (एक दिन का पुराना खाना है जिसे आप पसंद नहीं करते, अरबी में तआम नहीं कहलाता) फरमाया कि "अत: उस कटोरी में जिस में अभी ताज़ा खाना और पसन्द आने वाला रखा हुआ है।)" (थाली में खा रहे हैं यह तुम्हारे सामने पड़ा रखा है। "भोजन शुरू नहीं किया। फकीर की आवाज़ पर निकाल कर दे दो तो यह नेकी है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 75 संस्करण 1985 ई यू.के)

अभी ताज़ा खाना पड़ा हुआ है और कोई मांगने वाला आता है और वह उस को दे देता है तो यह नेकी है। न यह कि अच्छा मैं तो ताज़ा खाना खाता हूं और घर वालों को कह दिया कि कल का जो बचा हुआ खाना था वह उस ग़रीब को दे दो। तो इस सीमा तक गहराई में इंसान जाए तो नेकी को पा सकता है। अत: हकीकी नेकी करने की कोशिश करनी चाहिए और यह नेकी किस प्रकार पैदा होती है। यह नेकी ख़ुदा तआला पर पूर्ण ईमान के बिना प्राप्त नहीं हो सकती। अत: इस को स्पष्ट करते हुए एक स्थान पर आप फरमाते हैं कि

"वास्तविक नेकी के लिए, यह आवश्यक है कि ख़ुदा तआला के अस्तित्व पर विश्वास हो क्योंकि मजाज़ी(प्रतिरूप) अधिकारियों को यह नहीं पता कि कोई घर में क्या करता है और फिर पर्दा की पीछे उस का क्या काम है।" (अल्लाह तआला के

अस्तित्व पर ईमान हो कि अल्लाह तआला की प्रत्येक वस्तु पर नज़र है, ज़ाहिर में जो अधिकारी हैं, ज़ाहिरी तौर पर जो हुकूमत है, संस्थाएं हैं, उन्हें तो इंसान के अन्दर का नहीं पता कि क्या हो रहा है, लेकिन अल्लाह तआला को पता है और यह ईमान होना चाहिए कि अल्लाह तआला को सभी चीज़ों का ज्ञान है। वह सब बातों को जानता है। वह ग़ैब को जानता है।) "और अगर कोई जीभ से अच्छाई को स्वीकार करता है, परन्तु अन्दर से वह जो भी रहता है, उसके लिए उसे हमारी पकड़ का डर नहीं है और दुनिया की सरकारों में से कोई ऐसी नहीं जिस का भय इंसान को रात में और दिन में अंधेरे में और प्रकाश में वीराने और आबादी में, घर में और बाज़ार में, हर स्थिति में बराबर हो।"(कभी-कभी, इंसान छुप कर काम करता है, विभिन्न स्थानों पर बैठा हुआ है। विभिन्न अवस्थाओं में है और उसे पता है कि सिवाए अल्लाह तआला के कोई उस को देख नहीं रहा। उस को प्रत्येक चीज़ का पता है इस लिए भय भी नहीं है और इस भय न होने के कारण वे ग़लत काम कर जाता है। इसलिए अगर हकीकी नेकी करनी है तो अल्लाह तआला पर ईमान लाना बड़ा ज़रूरी है।) फरमाया "अत: नैतिकता को ठीक करने के लिए एसी हस्ती पर ईमान लाना ज़रूरी है जो प्रत्येक अवस्था और प्रत्येक समय में इस के निगरान और इस के कर्मों और इस के दिलों के भेदों का गवाह है।"

(मल्फूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 313 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

और ख़ुदा तआला की हस्ती के अलावा अन्य कोई नहीं। अत: यदि यह ईमान हो, इस गुणवत्ता का ईमान हो, हर समय अल्लाह तआला याद रहे, फिर मनुष्य वास्तविक सच्चाई कर सकता है।

फिर वास्तविक नेकी के बार में और अधिक स्पष्ट करते हुए आप फरमाते हैं कि "तक्वा के अर्थ हैं बुराई परहेज़ करना। मगर याद रखो नेकी इतनी नहीं है कि एक आदमी कहे कि मैं नेक आदमी हूं इसलिए कि मैं ने किसी का माल नहीं लिया। चोरी नहीं की किसी का माल नहीं लूटा। ग़लत तरीके से माल नहीं कमाया तो यह कोई नेकी नही है। फरमाया कि "चोरी नहीं की"(अगर कोई कहता है) चोरी नहीं करता, बुरी नज़र से नहीं देखता और व्यभिचार नहीं करता।एसी नेकी आरिफ के निकट हंसी के योग्य है क्योंकि अगर वह इन बुराइयों को करे और चोरी या डाका डाले तो वह सज़ा पाएगा। इसलिए यह कोई नेकी नहीं है जो आरिफ की नजदीक में सम्मान योग्य हो बल्कि असली और सच्ची नेकी यह है कि मानव जाति की ॅ सेवा करें और अल्लाह तआला के रास्ते में सही ईमानदारी और निष्ठा दिखलाए और जान तक देने को तैयार हो इसलिए यहां फरमाया है اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّ الَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ(अन्नहल 129) अर्थात "अल्लाह तआला उन लोगों के साथ है जो बुराई से बचते हैं और अच्छे कर्म भी करते हैं।" फरमाया कि "यह ख़ूब याद रखो, कि केवल बुराई से परहेज़ करना को ख़ूबी नहीं है।" (यह कहना की मैं बुराई नहीं करता बहुत नेक हूं यह तो कोई नेकी नहीं है) "जब तक उसके साथ नेकियां न करे। बहुत से लोग एसे होंगे जिन्होंने कभी व्यभिचार नहीं किया, ख़ून नहीं किया, चोरी नहीं की और डाका नहीं मारा इस के बावजूद कि उन्होंने अल्लाह तआला के मार्ग में कोई नेकी और वफादारी का नमूना नहीं दिखाया। कोई अल्लाह तआला के प्रसन्नता के लिए, अल्लाह तआला के आदेशों पर चलते हुए अल्लाह तआला के रास्ते में कोई नेकी नहीं की, कोई बलिदान नहीं दिया बावजूद इस के बहुत सारी अन्य बुराइयां उन्होंने नहीं कीं।) और इस तरीका पर कोई नेकी नहीं की (वास्तव में कई बुराइयों उन्होंने नहीं की, लेकिन अगर अल्लाह तआला का अधिकार अदा नहीं किया, उस का हक अदा नहीं किया यह कोई नेकी नहीं है) फरमाया "अत: अज्ञान हो गा वह आदमी जो इन बातों को प्रस्तुत करे। इस नेक लोगों में शामिल करे क्योंकि यह तो बुराइयां हैं केवल इतने विचार से औलिया अल्लाह में दाखिल नहीं होता।"

(मल्फूज़ात भाग 6 पृष्ठ 241-242 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर इस बारे में और अधिक आप फरमाते हैं

"यह गर्व की बात नहीं है कि मनुष्य इतनी सी बात से ख़ुश हो जाए कि वह व्यभिचार नहीं करता या उस ने ख़ून नहीं किया चोरी नहीं की, यह कोई गर्व की बात नहीं है कि बुरे कामों से बचने पर अंहकार करे। (यह तो कोई बुरी बात नहीं है कि कहे कि मैं ने कभी कोई बुराई नहीं की) फरमाया कि वास्तव में वह जानता है चोरी करेगा तो हाथ काटा जाएगा। फरमाया कि मौजूदा कानून के दृष्टि से कैद में जाएगा। (चोरी करेगा पकड़ा जाएगा जो जेल में जाएगा सज़ा होगी। तो यह तो कोई कमाल नहीं है यह तो सज़ा का भय है) फिर फरमाया कि अल्लाह तआला के निकट इस्लाम इस बात का नाम नहीं है कि बुरे काम से बचो बल्कि जब तक बुराइयों को छोड़ कर अच्छाइयों को धारण नहीं करते वह इस रूहानी ज़िन्दगी में जिन्दा नहीं रह सकता.(इस्लाम की शिक्षा की वास्तविकता यह है कि अपनी रूहानिय में वृद्धि करो अपनी रूहानी ज़िन्दगी को बेहतर बनाओ। अगर केवल बुराइयां छोड़ दीं तो रूहानी ज़िन्दगी बेहतर नहीं हो सकती। रूहानी जीवन को बेहतर बनाने के लिए बुराइयों को छोड़ कर अच्छाइयों को धारण करना होगा। वरना फरमाया कि रूहानी जीवन में ज़िन्दा नहीं रह सकता, फिर वह मुर्दा हो जाएगा।) फरमाया कि नेकिया खाने के तौर पर हैं जैसे कोई आदमी खाने के बिना ज़िन्दा नहीं रह सकता इसी तरह जब तक नेकी धारण न करे तो कुछ नहीं।

(मल्फूज़ात भाग 8 पृष्ठ 371-372 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

और यह हालत ईमान में बढ़ने से हासिल होती है। ख़ुदा तआला पर ईमान का स्तर कैसा होना चाहिए। यह स्तर तभी प्राप्त होगा जब इंसान का ज़ाहिर तथा अन्दरून एक हो और केवल एक ज़ाहरी ईमान न हो बल्कि जिस प्रकार यह विश्वास है कि एक ज़हर नुकसान करता है इंसान खा ले तो वह इस से मरता सकता है। जैसे कि यह विश्वास है कि अगर साँप एक सांप के छेद में यदि कोई व्यक्ति हाथ में है, तो अगर सांप अन्दर है तो डस सकता है। इसी तरह, अल्लाह तआला की ज़ात पर भी विश्वास होना चाहिए कि अगर मैं बुराइयां करूंगा तो अल्लाह तआला सर्वशक्तिमान मुझे हर बार देख रहा है, मुझे सज़ा मिलेगी। और अच्छे कर्म तो अल्लाह तआला फरमाता हैं, कि उसका इनाम देता है । इंसान के प्रत्येक कर्म से, अल्लाह तआला का अस्तित्व प्रकट हो रहा है। हर बार ऐसा लगता है कि ख़ुदा तआला मेरे सारे काम देख रहे हैं। आप फरमाते हैं कि " दरअसल नेक वही है जो बाहर और भीतर एक हो और जिसका दिल और बाहर एक है वह पृथ्वी पर फिरश्तों की तरह चलता है। " (जिस का बाहर और भीतर एक है। जो दिल में है वह ज़ाहिर में है तो उसकी अच्छाई की गुणवत्ता ऐसी हो गई कि वह फरिश्ता बन गया।) फरमाया कि " नास्तिक ऐसी हुकूमत के नीचे नहीं है कि वह अच्छे चरित्र को पा सके।" (एक नास्तिक जो ख़ुदा को नहीं मानता बेशक उसके आचरण अच्छे हैं लेकिन वे इस गुणवत्ता को नहीं पहुँच सकता। कहीं न कहीं उसके मन में ऐसी बात आ जाएगी जो खोट पैदा करने वाली है। हो सकता है बीमारियों से रुक जाए। कुछ बुनियादी नैतिकता भी दिखा दे लेकिन फिर भी नेकियों में इस की स्थिति कमज़ोर ही रहेगी।) फरमाया कि " सभी परिणाम ईमान से पैदा होते हैं। अत: सांप के छेद को पहचान कर कोई उंगली इस में नहीं डालता। जब हम जानते हैं कि एक मत्रा संखिया की कातिल है।" (ज़हर का नाम है) "तो हमारा इस इस के कातिल होने पर ईमान है और इस ईमान का नतीजा है कि हम उसे मुंह नहीं लगाएंगे और मरने से बच जाएंगे।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 313-314 संस्करण 1 9 85 में, यू. के)

ईमान के मज़बूत होने को अधिक स्पष्टीकरण करते हुए आप फरमाते हैं कि "वास्तव में समझो कि प्रत्येक पवित्रता और नेकी की असली जड़ ख़ुदा तआला पर ईमान लाना है।" जितना आदमी का अल्लाह तआला पर ईमान कमज़ोर होता है उतना ही नेक कर्मों में कमजोरी और सुस्ती करता है लेकिन जब ईमान मजबूत होता है और ख़ुदा तआला के सभी गुणों के साथ विश्वास कर लिया जाए उतनी ही अजीब रंग का परिवर्तन इंसान के कार्यों में पैदा हो जाती है। "(मनुष्य यह विश्वास कर ले कि अल्लाह तआला सब ताकतों का मालिक है भविष्य को जानने वाला है और हर जगह मुझे देख रहा है, फिर फरमाया कि इस तरह से एक अजीब रंग का परिवर्तन मानव के कार्यों में पैदा हो जाता है। अपने आप कर्म अच्छे होने लग जाते हैं। बुराइयों के स्थान पर नेकियों की तरफ ध्यान पैदा हो जाता है।)फरमाया कि ख़ुदा तआला पर ईमान रखने वाला गुनाह पर सामर्थय नहीं हो सकता।(यह नहीं हो सकता कि एक तरफ ख़ुदा तआला पर ईमान है दूसरी तरफ गुनाह कर रहा हो) क्योंकि यह ईमान इस की नफ्सानी ताकतों और गुनाह के अंगों को काट देती है। देखो अगर किसी की आंख निकाल दी जाए तो वह आंकों से बुरी नजर से कैसे देखेगा और आंखों का गुनाह कैसे करेगा। और अगर ऐसा ही हाथ काट दिए जाएं तो फिर वह गुनाह जो उस अंगों के बारे में हैं वह कैसे कर सकता है ठीक इसी तरह से जब एक इंसान नफ्से मुतमइन्ना के स्थान पर होता है तो नफ्से मुत्मइन्ना उसे अन्धा कर देता है और उस की आंखों में गुनाह की ताकत नहीं रहती। वह देखता है पर नहीं देखता। (बुरी नज़र से नहीं देखता। अगर कोई चीज़ देखता भी है तो बुराई की नज़र से नहीं देखता। या नाजायज़ इच्छाओं की नज़र है वह ख़तम हो जाती है।) फरमाया वह कान रखता है मगर बहरा होता है और वो बातें जो गुनाह की है सुन नहीं सकता। इसी तरह से उस की सारी नफ्सानी और शहवानी ताकतें औऱ भीतरी अंग काट दिए जाते हैं। उस की सारी ताकतों पर जिस से गुनाह हो सकता था एक मौत वारिद हो जाती है वह बिल्कुल एक मुर्दा की तरह से होता है और ख़ुदा तआला की इच्छा के अधीन

हो जाता है और उस के सिवा एक कदम भी नहीं उठा सकता। फरमाया कि यह वह हालत है जब ख़ुदा तआला पर सच्चा ईमान हो(ये सारी हालतें उस समय पैदा होंगी जब अल्लाह तआला पर सच्चा ईमान हो) और जिस का यह परिणाम होता है कि पूर्ण संतोष उस दिया जाता है फरमाया कि यही वह स्थान है जो इंसान का लक्ष्य होना चाहिए (यह टार्गेट है हमारा यह हमें अपने सामने रखना चाहिए कि प्रत्येक प्रकार के गंद को अपने दिमाग़ों से, अपनी आंखों से अपने कानों से भी निकालना है और सुनने से भी बचना है।) फरमाया और हमारी जमाअत को इस की ज़रूरत है और पूर्ण संतोष को प्राप्त करने के लिए पूर्ण ईमान की ज़रूरत है फरमाया कि अत: हमारी जमाअत का कर्तव्य है कि वह अल्लाह तआला पर सच्चा ईमान हासिल करे।

(मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 244-245 संस्करण 1985 मुद्रित यु. के)

यह है वह लक्ष्य जो आप हमें ने दिया कि सच्चा ईमान प्राप्त होगा तो नेक कर्म भी होंगे और तभी فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ के गिरोह में हम शामिल होंगे और तभी خَيْرُ الْبَرِيَّةِ मैं हमारी गिनती होगी। फिर नेकी के पहलुओं को समझाते हुए, आप फरमाते हैं:

"मनुष्य के लिए दो बातें आवश्यक हैं।" बुराई से बचे और नेकी की तरफ दौड़े और नेकी के दो पहलू हैं एक बुराई को छोड़ना और दूसरा नेकियों को प्राप्त करना। (बुराई को छोड़ना ठी क है एक नेकी है यह एक पक्ष है और दूसरा पक्ष है नेकी करना।) फरमाया कि,"बुराइयों को छोडने से मनुष्य परिपूर्ण नहीं हो सकता।" (केवल जब बुराई को छोड़ना है तो यह पूर्ण नहीं हो सकता इस ईमान में अभी कमज़ोरी है।"जब तक इस के साथ नेकी करना न हो अर्थात दूसरों को लाभ पहंचाना) नेकी करे दूसरों को लाभ पहुंचाए तब पूर्ण ईमान होता है फरमाया इस से पता लगता है किताना परिवर्तन किया है और यह स्तर तब प्राप्त होते हैं कि ख़ुदा तआला के गुणों पर ईमान हो और इन का ज्ञान हो। जब तक यह बात न हो इंसान बुराइयों से नहीं बच सकता। और अल्लाह तआला के गुणों का पता करने के लिए में मनुष्य को हमेशी कुरआन करीम भी पढ़ते रहना चाहिए।) फरमाया कि दूसरों को लाभ पहंचाना तो बहुत बड़ी बात है बादशाहों के रौब और हिन्द के कानून की सज़ाओं से भी एक सीमा तक (लोग) डरते हैं और बहुत से लोग हैं जो कानून का उलंघन नहीं करते फिर क्यों सब से बड़ कर फैसला करने वाले के आदेश को तोड़ने में दिलेर होते हैं क्या इस का कोई कारण है कि उस पर ईमान नहीं है ईमान में कमज़ोरी है इसलिए वरना तो हुकूमतों के कानूनों से डरते हो) फरमाया यही एक कारण है जो बुराइयां होती हैं जो नेकियां नहीं होतीं अत: जैसा कि पहले भी वर्णन हो चुका है कि ये कमज़ोरियां उस समय होती हैं जब ईमान में कमज़ोरी हो। इंसान अल्लाह तआला को अलीम ख़बीर तथा भविष्य का जानने वाला आस्था के रंग में तो समझता है परन्तु व्यवहार में इस का इंकार कर रहा होता है इस लिए बहुत सी बुराइयां इंसान कर जाता है और बहुत सारी नेकियों की इस के ईमान न होने का कारण तौफीक नहीं मिलती। फिऱ अल्लाह तआला पर कामिल ईमान के बाद शारीरिक बुराइयों से बचने के माध्यम को भी स्पष्ट करते हुए आप फरमाते हैं अत: बुराइयों से बचने का स्तर तब तय हो सकता है जब ख़ुदा तआला पर ईमान हो फिर दूसरी स्तर होना चाहिए कि उन रास्तों को तलाश करे जो अल्लाह तआला के नेक बन्दे और सुलहा करते हैं उन को धारण करो वह एक ही रास्ता है जिस पर चल कर जितने सच्चे और अल्लाह के नेक इंसान दुनिया में चल कर ख़ुदा तआला के फैज़ से लाभांवित हुए। इस रास्ता का पता लगता है कि इंसान मालूम करे कि ख़ुदा तआला ने उन के साथ क्या व्यवहार किया फरमाया कि पहला स्थान तो बुराइयों से बचने का ख़ुदा तआला की जलाली गुण की तजल्ली से प्राप्त होता है कि वह बुरे काम करने वालों का दुश्मन है। अपने निकट वालों के दुश्मनों को समाप्त कर देता है और फरमाया कि दूसरा स्तर ख़ुदा तआला की जमाली तजल्ली से प्राप्त होता है और आख़िर यही है कि जब तक अल्लाह तआला की तरफ से ताकत और शक्ति न मिले जिस को इस्लामी शरीयत में रूहुल कुदुस कहते हैं कुछ भी नहीं होता। यह एक ताकत होती है जो ख़ुदा तआला की तरफ से मिलती है इस को अवतरण का साथ ही दिल में एक संतोष आ जाता है और तबीयत में नेकी के साथ ओर मुहब्बत और प्यार पैदा हो जाता है। (अल्लाह तआला की जमाली तजल्ली होती है तो एक तो नेकी की तरफ ध्यान पैदा होता है। बुराई की तरफ ध्यान ही नहीं जाता और फिर संतोष दिल में पैदा होता है। यह है नेक लोगों का कर्म जो हमारे सामने नमूना है जिस को आप ने कहा है उस को देखो। नबियों के नमूनों को देखो।) फरमाया कि जिस नेकी को दूसरे लोग बहुत न कठिनाई और बोझ समझ कर करते हैं यह एक आन्नद और मज़ा के साथ इस को करने के लिए दौड़ते हैं। "(यानी जो अल्लाह तआला का प्यारा है।) "जैसे स्वादिष्ट चीज़ बच्चा भी शौक से खा लेता है उसी तरह जब सर्वशक्तिमान ख़ुदा तआला से संबंध हो जाता है और उसकी रूह उस पर उतरती है तो नेकियाँ एक स्वादिष्ट और खुशबूदार शर्बत की तरह होती हैं। वह सुन्दरता जो नेकियों के अन्दर होती हैं वह उस को नज़र आने लगती है और अपने आप उस की तरफ दौड़ता है। उनकी आत्मा बुराई की सोच से ही कांपने लगती है।" फरमाया कि "ये मामले इस प्रकार के हैं कि हम इस को शब्दों में पूरी तरह से वर्णन नहीं कर सकते।" (एक अजीब दिल की अवस्था होती है दिल का आन्नद होता है जिस को शब्दों में वर्णन करना बहुत कठिन होता है।) फरमाया "क्योंकि यह हृदय की स्थिति है।"(यह दिल ही महसूस कर सकता है।) "महसूस करने से ही इन का ठीक से पता लगता है उस समय नवीनतम नूर उस के पता चलते हैं मनुष्य केवल इस बात कीपर ही गर्व न करे और अपनी तरक्की कि कभी कभी इस के अन्कर करूणा पैदा हो जाती।"(यह करूणा पैदा होने का उदाहरण आप देते हैं कि)" व्यक्ति अक्सर उपन्यास पढ़ता है और उसके दर्द वाले हिस्सा पर पहुंच कर अपने आप पो देता है।"(बहुत से लोग जो उपन्यास पढ़ रहे होते हैं और रोने लगते हैं, इस में इस प्रकार की कहानियां आती हैं, और घटनाएं होती हैं।) फरमाया कि "हालांकि वह स्पष्ट जानता है कि यह एक झूठी और काल्पनिक कहानी है "(लेकिन फिर भी वह पढ़ता है।)" इसलिए यदि रो पड़ना या करूणा का पैदा हो जाना सच्चे आन्नद की जड़ और प्रसन्नता है, तो आज यूरोप से बढ़कर को कोई आध्यात्मिक सुख पाने वाला न होता "(क्योंकि यहां तो ज़रा-ज़रा सी बात पर भावुक होकर रोने लग जाते हैं।) फरमाया "क्योंकि असंख्य उपन्यास प्रकाशित होते और लाखों-करोड़ों व्यक्ति पढ़ कर रोते हैं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 238 से 240 प्रकाशन 1985 ई)

कहानियां पढ़ा कर रोते हैं ड्रामे पढ़ कर रोते हैं। कुछ लोग वैसे ही अपने और दूसरों की घटनाएं वर्णन कर रहे होते हैं और बहुत भावुक हो जाते हैं, इसलिए यह आध्यात्मिकता का विकास नहीं है। आध्यात्मिकता का विकास केवल तब होता है जब बुराइयों से व्यक्ति सम्पूर्ण रूप से बचे और नेकियों को सम्पूर्ण रूप से अल्लाह तआला के धारण करे।

फिर नेकियों की प्राप्ति को स्पष्ट कर के आप ने वर्णन किया। पहले दो पक्ष ते बुराई को छोड़ना और नेकी करना अब इस के दो भाग वर्णन किए हैं । फरमाया कित " इंसान जितनी नेकियां करता है इस के दो हिस्से होते हैं एक फर्ज़ और दूसरा नफल।'' (नेकी के दो हिस्से हैं एक फर्ज़ नेकी है और एक नफल नेकी है)" फर्ज़ अर्थात जो इंसान पर फर्ज़ किया गया हो जैसे कर्ज़ा का उतरना।"(फरमाया किसी से कर्ज़ा लिया हो तो कर्ज़ा का उतरना इंसान पर फर्ज़ हा) या नेकी के मुकाबला में नेकी"(करना यह तो फर्ज़ है)" इन फर्ज़ों के साथ प्रत्येक इंसान के साथ नफल भी होते हैं।"(जो अधिक हो वह नेकी है)" अर्थात एसी नेकी जो उस के अधिकार से अधिक हो जैसे उपकार के बदला में और उपकार करना और इहसान करना। यब नफल हैं"(इन से फर्ज़ पूर्ण होते हैं और अपनी पूर्णता को पहुंचते हैं) हदीस वर्णन करते हुए आप वर्णन करते हैं कि(औलिया अल्लाह के धार्मिक फर्ज़ों की पूर्णता नफलों से होती है।(आप ने हदीस वर्णन की थी इस की तफ्सीर वर्णन फरमा रहे हैं कि औलिया अल्लाह जो हैं उन के धार्मिक फर्ज़ों की सम्पूर्णता नफलों से होती रहती है।)" जैसे ज़कात के अतिरिक्त और सदके देते रहते हैं। अल्लाह तआला एसे वलियों का हो जाता है। अल्लाह तआला फरमाता है कि उस की दोस्ती यहां तक हो जाती है कि मैं उस का हाथ पांव आदि (यह हदीस में आया है कि मैं उन के हाथ पांव आदि) यहां तक कि उस की भाषा बन जाता हूं जिस से वह बोलता है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 13 -14 संस्करण 1 9 85, यूनाइटेड किंगडम)

जब मनुष्य ईमान में बढ़ता है अल्लाह तआला पर विश्वास में बढ़ता है और फिर अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिए अच्छे कर्म करता है, फिर अल्लाह तआला और अधिक नेकियों की भी ताकत देता है। अत: इस बारे में आप फरमा रहे हैं।

" इस्लाम के लिए सर्वशक्तिमान ख़ुदा तआला का स्वाभाविक कानून है कि एक नेकी से दूसरी नेकी पैदा हो जाती है। " फरमाया "मुझे याद आया तज़करतुल औलिया में मैंने पढ़ा था कि एक आग की पूजा करने वाला बूढ़ा 90 साल का था संयोग से बारिश की झड़ी जो लग गई तो वह इस झड़ी में कोठे पर (चढ़ के) चिड़ियों के लिए दाने डाल रहा था।"(लगातार कई दिन बारिश होती रही। वह अपनी छत पे चढ़ गया और वहाँ जा कर चिड़ियों को, पक्षियों को दाने डाल रहा था)"एक वरिष्ठ बुजुर्ग ने कहा,"(उसके निकट एक मुस्लिम बुज़ुर्ग था, उस ने कहा) " निकट से कहा कि अरे बूढ़े तुम यह क्या कर रहे हो? उस ने कहा कि भाई छ: सात दिन लगातार बारिश हो रही है। चिड़ियों को दाने डालता हूं। उस बुज़ुर्ग ने कहा कि तुम

बेकार में काम करते हो(व्यर्थ इस का तुम्हें कोई लाभ नहीं।) " तू काफिर है तुझे बदला कहां।?)(तुझे उस का बदला क्या मिलेगा, तुझे क्या बदला मिलेगा तुम तो काफिर हो?) "बूढ़े आदमी ने जवाब दिया," मुझे निश्चित रूप से इसका इनाम मिलेगा।"(उसे अल्लाह तआला की हस्ती पर तो विश्वास था। बहरहाल उसकी एक नेक प्रकृति थी। दिल की आवाज़ थी उस ने कहा कि मुझे बदला ज़रूर मिलेगा) वह "बुज़ुर्ग साहिब कहते हैं कि मैं हज को गया तो दूर से क्या देखता हूँ कि वही बूढ़ा परिक्रमा कर रहा है।"(वही चिड़ियों को दाना डालने वाला जो आग की पूजा करने वाला था वह हज पर ख़ाना काबा की परिक्रमा कर रहा था।)" मुझे यह देखकर हैरानी हो रही है और जब मैं आगे बढ़ तो पहले वही बोला।"(मैं उससे कोई सवाल करता पहले वह बोला कि) "क्या मेरा दाना डलना व्यर्थ गया या बदला मिल गया?""आज मुसलमान हो कर जो हज्ज कर रहा हूं यह इनाम अल्लाह तआला ने मुझे उन पक्षियों को दाना डालने के कारण दिया है। तो अल्लाह तआला इस प्रकार देता है फिर आप फरमाते हैं "सोचना चाहिए कि अल्लाह तआला एक काफिर की नेकी का बदला भी नष्ट नहीं करता तो क्या मुसलमान की नेकी का बदला नष्ट कर देगा।? फरमाते हैं "मुझे एक सहाबी का ज़िक्र याद आया कि उस ने कहा हे अल्लाह के रसूल मैंने अपने कुफ्र की अवस्था में बहुत से सदके किए हैं क्या उन का बदला हमें मिलेगा?(जब मैं काफिर था मैं बहुत सदका किया करता था। नेकियां करने की कोशिश करता था मुझे बदला मिलेगा) आप(सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फरमाया वही सदके तो तेरे इस्लाम लाने का कारण हो गए हैं" (इन सदकों का बदला तुम्हें मिला है जो तुम आज मुसलमान हो गए हो।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 74-75 संस्करण 1985,यु.के)

फिर इस बात को वर्णन करते हुए कि जायज़ चीज़ों को भी सीमा के अन्दर रखना चाहिए और यही नेकी है। आप फरमाते हैं कि

" नेकी की जड़ यह है कि दुनिया के सुख और आन्नद जो कि वैध हैं उन्हें भी सीमा से अधिक न ले जैसा कि खाना पीना अल्लाह तआला ने हराम तो नहीं किया लेकिन अब इसी खाने को एक व्यक्ति ने रात दिन का काम बना लिया है। उसका नाम धर्म पर बढ़ता है, अन्यथा यह दुनिया के लिए है कि इस के माध्यम से नफ्स का क घोड़ा जो है कमज़ोर न हो।"(अल्लाह तआला ने खाने पीने में आन्नद दिया है परन्तु इसलिए कि इस के द्वारा इंसान में ताकत पैदा हो और इंसान अल्लाह तआला के जो कर्तव्य हैं वे भी अदा कर सके। खाते समय यह भी सोच होनी चाहिए कि सेहत कमज़ोर न हो । फरमाया कि "इसका उदाहरण उस व्यक्ति की तरह है जो लंबे समय से यात्रा करता है, सात या आठ कोस के बाद, वे घोड़े की कमज़ोरी महसूस कर करे उसे सांस दिला लेते हैं।" (ठहर जाते हैं।)"और निहारी आदि खिलाते हैं ताकि इस की पिछली छकान दूर हो जाए तो"(फरमाया कि) " नबियों ने जो दुनिया का आन्नद लिया वह इस प्रकार का है।"(नबी भी खाते पीते हैं जो संसारिक चीज़ें हैं उस ने उन को आन्नद प्राप्त होता है। शान्ति मिलती है । शादी व्याह करते हैं । औलाद है खाना पीना है सांसारिक चीज़ें हैं। ये सब चीज़ें नबी भी प्रयोग करते हैं फरमाया कि उन्होंने जो दुनिया का आन्नद लिया वे इसी प्रकार का है।)" क्योंकि एक बड़ा काम दुनिया का सुधार उन के ज़िम्मा था। अगर ख़ुदा की फज़ल उन के ज़िम्मे न होता तो हलाक हो जाते।"(मल्फूज़ात भाग 4 पृष्ठ 374-375 संस्करण 1985 यू.के) (तो जिस तरह एक घोड़े वाला, टांगे वाला अपने घोड़े को ताज़ा रखने के लिए खिलाता पिलाता है उसी तरह जो नबी हैं वे अगर खाते हैं पीते हैं या अच्छी वस्तुएं प्रयोग करते हैंतो केवल इसलिए कि दुनिया के सुधार की तरफ ध्यान दें।

एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर किसी ने आपत्ति जताई और हज़रत ख़लीफा अव्वल से कहा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पलाओ भी खा लेते हैं? हज़रत ख़लीफा अव्वल ने कहा कि, "मैंने तो कहीं नहीं पढ़ा न कुरआन में न हदीस में कि अच्छा खाना नबियों को जायज़ नहीं।"

(उद्धरित रजिस्टर रिवायत सहाबा (अप्रकाशित) भाग 5 पृष्ठ 48 रिवायत हज़रत निज़ामुद्दीन साहिब टेलर)। खाते हैं तो क्या हो गया। इसलिए, इस तरह के लोग हमेशा आरोप करते हैं लोग समझते हैं कि केवल कड़वा खाना खाने से बहुत अच्छा होता है। हालांकि यह ग़लत है। हमें उसी सुन्नत में चलना चाहिए, जो हमारे सामने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पेश की है। आप ने एक सहाबी को फरमाया कि मैं अच्छा भोजन भी खाता हूं। मैं अच्छे कपड़े भी पहनता हूं। मैंने शादियां भी की हैं मेरी औलाद भी है। मैं सोता भी हूँ। मैं पूजा भी करता हूँ। अत: यह मेरा सुन्नत है जिस पर तुम्हें चलना चाहिए।

(तफसरी अद्दुरे मन्सूर जिल्द 3, पृष्ठ 131 तफसीर सूर: अलमाइद: 78 से 88 मुद्रित दारे अहयाउल तरात अल-अरबी बैरूत 2001)

बहरहाल आगे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:

"नबियों की यह रीति नहीं था कि इसमें ही जुट जाते हैं। "(यही सांसारिक चीज़ों में कोई लीन नहीं हो जाते।) "किसी बात में डूब जाना बेशक एक ज़हर है। एक बुरा आदमी जो कुछ चाहता है वह करता है और जो चाहता है वह खाता है। इसी तरह अगर एक सालेह भी करे तो ख़ुदा तआला की राहें उस पर नहीं खुलतीं।" (एक बुरा काम करने वाला आदमी तो सांसारिक दृष्टि से सब काम कर रहा होता है परन्तु एक नेक आदमी नहीं। अगर वह इस तरह करे होगा तो ख़ुदा तआला की राहें उस पे नहीं खुलेंगी।) फरमाया कि "जो ख़ुदा तआला के लिए कदम उठाता है ख़ुदा तआला ज़रूर उसका ध्यान रखता है। अल्लाह तआला फरमाता है اِعْدِلُوْا هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى (अल्माइद: 9) फरमाया कि भोग विलास औ खाने पीने की चीज़ों में सीमा में रहने का नाम तक्वा है। केवल यह गुनाह नहीं है कि मनुष्य व्यभिचार न करे। चोरी न करें बल्कि वैध मामलों में सीमा से न बढ़े।"

(मल्फूज़ात भाग 4 पृष्ठ 375 संस्करण 1985 ई यू. के)

जो चीज़ें वैध हैं उनमें मध्यम रहना यह भी तक्वा है और यह भी तक्वा है। हमारी शिक्षा के इस हिस्से को बताते हुए, अधिकारियों के साथ कैसा नेकी क्या है? और आम रिश्ते जो प्रियजनों के साथ संबंध हैं और इस में क्या नेकी है? आप फरमाते हैं, "हमारा शिक्षा तो यह है कि सबसे नेक व्यवहार करो। अधिकारियों की सच्ची आज्ञाकारिता करनी चाहिए क्योंकि वे रक्षा करते हैं।"(सरकार और गवर्मेन्ट का भी पालन करना चाहिए क्योंकि वे अपने नागरिकों के सही कर्तव्यों को अदा कर रहे हैं।)"जन और धन उनके द्वारा शांति में हैं। और समुदाय के साथ भी अच्छा व्यवहार और सुलूक करना चाहिए क्योंकि समुदाय के भी अधिकार हैं।" कहा "लेकिन जो मुत्तकी नहीं और बदिअतों तथा शिर्क में गिरफ्तार हैं और हमारे विरोधी हैं उनके पीछे नमाज़ नहीं पढ़नी चाहिए। " (नेक व्यवहार करना है करो। लेकिन नेकी का यह मतलब नहीं कि जो हमारे विरोधी हैं और हमारे पे फतवे लगाने वाले हैं, बिदअतों में गिरफ्तार हैं उनके पीछे नमाज़ें पढ़ने लग जाओ है। वह नहीं पढ़नीं।) फरमाया कि "लेकिन उनसे अच्छा व्यवहार करना चाहिए।" (लेकिन नेक सलूक उनसे बहरहाल करना है। जितनी मर्ज़ी हमारे विरोधी हों।) फरमाया कि "हमारा सिद्धांत तो यह है कि सभी से नेकी करो। जो दुनिया में किसी से नेकी नहीं करती वह आख़रत में क्या बदला लेगा? इसलिए सब के लिए नेकी को चाहने वाला होना चाहिए। हां, धार्मिक मामलों में ख़ुद को बचाना चाहिए। जिस तरह से डाक्टर हर मरीज का इलाज करता है और उसका इलाज करता है, चाहे वह हिन्दू या ईसाई या किसी अन्य धर्म का। इसी तरह से नेकी में सामान्य सिद्धांतों को ध्यान में रखना चाहिए।" फरमाया "अगर कोई यह कहे कि पैग़म्बरे ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय में काफिरों की हत्या कर दी गई तो इसका जवाब यह है कि वे लोग अपनी कुटिल युक्ति और कष्ट पहुंचाने का कारण से और मुसलमानों को मारने के कारण से दोषी हो चुके थे।" (मुसलमानों की हत्या करते थे। उन पर अत्याचार करते थे। उनकी सजा के तौर पर उन्हें सजा दी गई) "उन्हें जो सज़ा मिली दोषी होने के रूप में थी (इसलिए नहीं थी कि उन्होंने इनकार किया।) "केवल इन्कार अगर सादगी से हो और उसके साथ शरारत और धमकी न हो तो वह इस दुनिया में अज़ाब का कारण नहीं होता।"

(मल्फूज़ात भाग 3 पृष्ठ 319-320 यू. के 1 9 85, इंग्लैंड)

नेकी की सीमा को किस प्रकार विस्तार करना चाहिए? आप फरमाते हैं कि: "याद रखें, सहानुभूति की सीमा मेरे निकट बहुत व्यापक है। किसी क़ौम या व्यक्ति को अलग मत करे। मैं आजकल के अज्ञानियों की तरह यह नहीं कहता कि तुम केवल अपनी सहानुभूति को मुसलमानों के साथ ही विशेष कर दो। नहीं, मैं कहता हों तुम ख़ुदा तआला के सभी प्राणियों के साथ सहानुभूति करो। चाहे वह हिंदू है या मुस्लिम या कोई और। मैं कभी ऐसे लोगों की बात पसंद नहीं है जो अपनी सहानुभूति को अपनी ही क़ौम के साथ विशेष करना चाहते हैं। उनमें से कुछ ऐसे विचार भी रखते हैं कि यदि उन में से कोई एक शीरनी के मटके में डाल हाथ डाल दे और फिर उन्हें एक तिल के डिब्बे में डाल दिया जाता है तो जितने तिल उस को लग जाएं उतना धोखा दूसरों को दे सकते हैं।" (यह कुछ ग़ैर अहमदियों के सिद्धांत है कि शीरा या शहद कोई मीठी चीज़ लें। हाथ डालो बाहर निकालो बाहर निकाल के तिल के ढेर में हाथ डालो और जितने तिल हाथ के साथ लग जाएं इतना आप धोखा दे सकते हैं। इतना धोखा देना वैध है। इतने लोगों के अधिकार छीन लेने वैध हैं। फरमाया कि ये सब चीज़ें बहुत अधिक गुनाह हैं। यह बिल्कुल वैध नहीं। फरमाया कि) "उनकी ऐसी बेहूदा और ख़यालो बातों ने बहुत बड़ा नुकसान पहुंचाया है और उन्हें लगभग बर्बर और दरिन्दा बना दिया है।" (यही आजकल के मुसलमानों की स्थिति है।)" परन्तु मैं तुम्हें बार बार यही समझाता हूं कि तुम कभी भी अपनी

सहानुभूति की सीमा को सीमित मत करो और सहानुभूति के लिए उस शिक्षा का अनुकरण करो जो अल्लाह तआला ने दी है اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَ الْاِحْسَانِ وَ اِيْتَآئِ ذِى الْقُرْبٰى अर्थात नेकी करने में तुम न्याय को प्राथमिकता दो। जो कोई तुम से नेकी करे तुम भी उस से नेकी करो। और फिर दूसरा स्तर यह है कि तुम उस से बढ़ कर उस से व्यवहार करो यह दया है यद्यपि दया का स्तर न्याय से बढ़ कर है और यह एक महान गुण है, लेकिन संभव है कभी-कभी दया करने वाला दया को जता दे। परन्तु इन सब से ऊपर एक तथ्य है कि मनुष्य को इस तरह से अच्छा करना चाहिए कि व्यक्ति का प्यार निजी रंग में है, जिसका भी एहसान दिखाने का कोई हिस्सा न हो जैसा कि एक मां अपने बच्चे को पालती है वह इस के लिए कोई इनाम और बदला नहीं चाहती है, लेकिन यह एक कुदरती जोश होता है जो बच्चे के लिसए अपने सभी सुख और आराम को बलिदान करती है और बच्चे को आराम देती है। यहां तक कि अगर कोई राजा एक मां को आज्ञा दे कि अपने बच्चे को स्तनपान न कराए और यदि आप ऐसा करने से बच्चा नष्ट भी हो जाए तो उसे दंडित नहीं किया जाएगा। तो क्या माँ ऐसी बात सुनकर प्रसन्न होगी? और क्या उस के आदेश का पालन करेगी? कदापि नहीं। बल्कि, वह तो ऐसे राजा को अपने दिल बुरा भला कहेगी कि उसने ऐसा क्यों कहा। अत: इस तरीके से नेकी हो कि उसे कुदरती रूप तक पहुंचा दिया जाए, क्योंकि जब कोई चीज़ सम्पूर्णता को प्राप्त होती है जब अपनी शारीरिक पूर्णता तक पहुंचती है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 7, पृष्ठ 282-283. संस्करण 1 9 85 यू .के)

इसलिए, अच्छे कर्म ऐसे हों कि हृदय से हमेशा नेकियों का विचार आता रहे। आपने फ़रमाया कि " भौतिक जोश से मानव जाति की सहानुभूति का नाम "इताए ज़िल कुर्बा" है और इस क्रम से ख़ुदा तआला की यह इच्छा है कि अगर तुम पूरा नेक बनना चाहते हो तो अपनी अच्छाई को "इताए ज़िल कुर्बा"तक पहुंचाओ। जब तक कोई चीज़ उन्नति करते करते अपने भौतिक कमाल तक प्रगति न करे, वह पूर्णता को प्राप्त नहीं होती।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 7, पृष्ठ 283. संस्करण 1 9 85 यू .के)

फरमाया कि:" याद रखो कि ख़ुदा तआला नेकी को बहुत पसंद करता है और वह चाहता है कि उस के प्राणियों के साथ सहानुभूति की जाए। यदि वह बुराई को पसंद करता है, तो वह बुराई करने को कहता लेकिन अल्लाह तआला की शान इस से शुद्ध है। (सुब्हानल्लाह शानहो)"

(मल्फ़ूज़ात भाग 7, पृष्ठ 284 संस्करण 1 9 85 यू .के)

अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे कि नेकियों को अल्लाह तआला की ख़ुशी के लिए करने वाले हों और अल्लाह तआला ने فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ जो लक्ष्य हमारे लिए नियुक्त किया है उसे प्राप्त करने वाले हों।

नमाज़ के बाद मैं कुछ नमाज़े जनाज़ा पढ़ाऊंगा। पहला जनाज़ा जो है वह आदरणीय हामिद मकसूद आतिफ साहिब मुरब्बी सिलसिला पुत्र आदरणीय प्रिय प्रोफेसर मसूद अहमद आतिफ साहिब का है जो 22 अक्तूबर को गुर्दे फेल होने की वजह से ताहिर हार्ट रबवा में 48 साल की उम्र में वफात पा गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। आप हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के सहाबी अब्दुल रहीम दर्द साहिब के नवासे थे। आपके पिता, प्रोफेसर मसूद अहमद आतिफ थे जिन्हें 1955 ई से 1986 ई तक तालीमुल इस्लाम कालेज में भौतिकी को पढ़ाने का अवसर मिला था। यह मकसूद आतिफ साहिब मसूद अतिफ साहिब के पुत्र थे। उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा रब्वा में प्राप्त की। फिर ज़िन्दगी वक्फ कर के जामिया में दाख़िल हुए। 1991 में शाहिद पास किया। पहले तो उन की इच्छा थी कि सेना में चले जाएं लेकिन फिर एक सपने के बाद उन्होंने कॉलेज छोड़ दिया और जामिया में भर्ती हुए और वहाँ से शाहिद की डिग्री पाने का अवसर मिला। अल्लाह तआला की कृपा से इन की पत्नी के अतिरिक्त, दो बेटियां और एक बेटा है, और तीनों बच्चे इन के शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। छोटा बेटा, वासिफ हमीद मदरस्सातुल कुरआन में कुरआन याद कर रहा है।

मकसूद आतिफ ने 1991 ई में स्नातक किया। फिर उन्हें पाकिस्तान के विभिन्न शहरों में नियुक्त किया गया। फिर, फ्रांसीसी भाषा सीखने के लिए, उन्होंने इस्लामाबाद में नमल विश्वविद्यालय में भर्ती हुए और फिर मई 1997 ई में उन्हें आइवरी कोस्ट में प्रचारक के रूप में भेजा गया। 2002 ई में आइवरी कोस्ट में काम किया था। फिर 2016 ई तक, बुर्किना फासो में सेवा की और फिर गुर्दा की समस्याओं के कारण पाकिस्तान वापस बुलाया। आपकी पत्नी का कहना है कि जब मैं आइवरी कोस्ट गई हूं तो फ्रेंच पढ़ाने में कड़ी मेहनत की ताकि मेरे व्यवहार और लोगों से बातचीत में आसनी हो और लजना की तरबियत में भी आसानी हो। प्राय: उन के बारे में लिखने वालों ने लिखा है कि बड़े हंसमुख थे। बे-तकल्लुफ थे। बहुत बुद्धिमान थे। मज़ाक़ करने वाले थे। बड़ों का और उनके साथियों का सम्मान करने वाले थे। आज्ञाकारिता और बात मानने की भावना उन में बहुत अधिक थी और बेनफ्स इंसान थे। अल्लाह तआला उन के स्तर उंचा करे और उन के बच्चों को भी धैर्य और प्रोत्साहन भी प्रदान फरमाए। नेकियों को जारी रखने की तौफीक़ प्रदान करे।

दूसरा जनाज़ा अली सईद मूसा तंज़ानिया पूर्व अमीर जमाअत तंज़ानिया है जो 30 सितम्बर को 67 वर्ष की आयु में वफात पा गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। 1 9 5 0 ई में चटांडी (Chitandi) तंज़ानिया में पैदा हुए थे। फिर उन्होंने 1 9 80 ई में दारुस्सलाम विश्वविद्यालय में प्रवेश किया। अर्थशास्त्र में बी.ए की डिग्री प्राप्त की। फिर 1 9 80 ई में कृषि अर्थशास्त्र की डिग्री प्राप्त की। विभिन्न सरकारी पदों पर रहे। हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे ने उन्हें कुरआन का याओ (Yao) भाषा में अनुवाद करने के लिए इरशाद फ़रमाया था लेकिन अपनी सरकारी व्यस्तता के कारण और अन्य कार्यों के कारण उन्होंने बड़ी देर लगा दी जिस पर हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे ने कहा कि इस गति से अनुवाद में कम से कम तीस साल लगेंगे और बड़ी चिंता व्यक्त की थी। बहरहाल यह सुनकर, अली सईदी साहिब बहुत भावुक हो गए और उन्होंने वादा किया कि मैं जल्दी ही कुरआन का अनुवाद करूंगा। इसलिए उन्होंने अपने सभी काम छोड़ कर कुरआन के अनुवाद पर ध्यान दिया और पांच साल में इसका अनुवाद पूरा किया। 2006 में तंजानिया का जमाअत का अमीर नियुक्त किया गया था और बुरुंडी और मोज़ाम्बीक और मलावी की जमाअतें भी आप की निगरानी में थीं। इन की अमारत में, जमाअत ने वहां माध्यमिक विद्यालय भी जारी किया और जमाअत ने ज़मीन का एक बड़ा क्षेत्र भी हासिल कर लिया। बहुत ईमानदारी और वफादार इंसान थे। ख़िलाफत से गहरी वफादारी थी पत्नी के अतिरिक्त तीन बेटियां और तीन बेटों को यादगार छोड़ा है। अल्लाह तआला सब को उन की नेकियों को जारी रखने की तौफीक प्रदान करे। उनके स्तर बढ़ाए ।

और तीसरा जनाज़ा आदरणीया नुसरत बेगम सादिका साहिबा गरमोलह वरकां हाल रबवा का है जो 16 और 17 अक्तूबर की मध्य रात्रि ताहिर हार्ट इंस्टीट्यूट में वफात पा गईं। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। आप मोमिन ताहिर साहिब की मां हैं जो हमारे अरबी डेस्क के प्रभारी हैं। उनकी सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता तौहीद से बहुत अधिक मुहब्बत थी और शिर्क से नफरत थी। अल्लाह तआला पर भरोसा और ग़रीबों का ध्यान रखना, अपनी नेकी को छिपाना, बहुत विनम्रता वाली थीं। उनके दादा हज़रत मियां अता उल्लाह साहिब सहाबी थे और मौलाना बुरहानुद्दीन साहिब के माध्यम से उन्होंने कादियान आकर बैअत की थी। कुरआन करीम पढ़ाने का उन को बहुत शौक था। ठीक पढ़ने और पढ़ाने का उन को बहुत शौक था। जब हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला ने तहरीक फ़रमाई कि बड़ी अशिक्षित महिलाओं को भी कुरआन शरीफ जानने की कोशिश करनी चाहिए तो कुछ सत्तर सत्तर साल की अनपढ़ महिलाओं ने भी उनसे कुरआन पढ़ना सीखा बल्कि कुछ ने अनुवाद भी सीख लिया। अविवाहित महिलाओं और लड़कियों ने भी आप से कुरआन पढ़ा। ग़ैर अहमदी औरतें और बच्चियां भी आप से कुरआन और अनुवाद सीखती थीं। बहुत सी बच्चियों ने लजना के पाठ्यक्रम की पुस्तकों को पढ़ कर आप से पढ़ना सीखा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तक के अध्ययन का बहुत शौक था। कविताएं बड़ी याद थीं। और कलामे महमूद, दुर्रेअदन और दुर्रेसमीन आदि के बहुत सारे शेर याद थे। उनके पुत्र लिखते हैं कि महमूद की अमीन वाली नज़्म तो अक्सर बहुत दर्द से पढ़ती थीं और आँसुओं से रोती थीं। इसी तरह, उन्होंने बिदअत के ख़िलाफ अपने गांव में बड़ा काम किया। कमज़ोर ईमान वाली औरतें जिन्हें टोने टोटकों की आदत थी या करवाती थीं तो बड़ा लंबा जिहाद करके उनसे यह आदत हटवाई और उन्हें सही मोमिना बनने की ओर ध्यान दिलाया। नमाज़ें बहुत दर्द से पढ़ती थीं। कुरआन की नियमित तिलावत करने वाली थीं और मूसिया थीं। मरहूमा के छह पुत्र थे। उनके चार बच्चे वक्फ हैं। एक तो मोमिन साहिब हैं मैंने बताया। बाकी बच्चे भी जमाअत की सेवा कर रहे हैं। अल्लाह तआला मरहूमा के स्तर उंचा करे उन की सन्तान को सब प्रियों को उन के नक्शे कदम पर चलने की तौफीक प्रदान फरमाए।

☆ ☆ ☆

☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

और ख़लीफा से हाथ मिलाने पर दिल ने महसूस किया कि यह एक ख़ुदा तआला का बन्दा है जिस से मेरी मुलाकात हुई है।

Mr Tobias Erben कहते हैं कि समारोह का शांतिपूर्ण वातावरण और बेहतरीन मेजबानी के साथ अच्छी व्यवस्था मुझे बहुत अच्छे लगे और इमाम जमाअत अहमदिया के भाषण का एक एक शब्द दिल को प्रभावित करने वाला था और पारंपरिक नेताओं की तरह लिखी लिखाई तकरीर नहीं पढ़ दी बल्कि अन्य वक्ताओं की बातचीत का विश्लेषण, और आपका सम्बोधन कई विषयों से संबंधित था, जिसमें इस्लाम की शांति और सुरक्षा का संदेश दिल पर गहरा प्रभाव पड़ा है। मुझे ख़ुशी है कि हमारे समाज में जमाअत-ए-अहमदीया की शुरुआत हुई क्योंकि मस्जिद सड़क के किनारे आ गई है और लोग इस कारण से अधिक परिचय प्राप्त करेंगे। मैंने अपने कैलेंडर में 3 अक्टूबर को चिह्नित किया हुआ है ताकि मैं मस्जिद में आयोजित होने वाले कार्यक्रम में भाग ले सकूं और मेरी कोशिश होगी कि आप के युवाओं के खेलों और प्रोग्रामों के आयोजन के लिए जगह प्रदान करने में मदद करूं।

Mr Rene जो बीस वर्षीय किशोर हैं और जमाअत से परिचित हैं। उनका कहना था कि आप के समारोह में हमेशा की तरह शांति और भाईचारे का माहौल था जिसमें इमाम जमाअत अहमदिया का आकर्षक ख़िताब ऐसी चीज़ थी जिसका असर मेरे दिल में है।

लाम्बबर्ग शहर में इंटरमीडिएट स्टडीज के छात्रों के प्रमुख डॉ फ्रैंक एफ आर्टिलॉन ने इस अवसर पर अपने विचारों का वर्णन करते हुए कहा था कि सम्माननीय इमाम जमाअत के भाषण से महसूस होता है कि आप अपने विषय पर पूरी पकड़ रखते हैं और दर्शकों तक धर्म और उस के इस युग में महत्व को उजागर करके दिखाते हैं और अन्य वक्ताओं की बातों को समाने रखते हुए एक संतुलित विश्लेषण प्रस्तुत फरमाते हैं और हमने पाया कि हर व्यक्ति जमाअत के ख़लीफा की ज़ात से एक गहरा और हार्दिक सम्बन्ध है जिस को दूरी के बावजूद हम महसूस कर सकते हैं।

गीज़ेन शहर की महिला, एक डॉ श्रीमती फिंक कहती हैं, "मैं आपको इस व्यवस्थित आयोजन की बहुत बधाई देती हूं और मैं इस तरह के शांतिपूर्ण और समृद्ध आयोजन में विभिन्न धर्मों के लोगों को देखकर बहुत ख़ुश हूं और मैं इमाम जमाअत अहमदिया के पवित्र व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुई थी मैंने उन्हें एक शांत और व्यावहारिक व्यक्तित्व पाया और उनके अस्तित्व से सारा आयोजन एक शांत स्थान लग रहा था। मुझे भविष्य में भी आप के आयोजन में शामिल होने की इच्छा रहेगी।

Mrs कस्टेलिया ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा कि आप के ख़लीफ़ा की हस्ती में इंसान की मुहब्बत और सहानुभूति को देखकर, मुझे लगा कि ऐसा अस्तित्व ही अपने संदेश को सर्वोत्तम तरीके से पहुंचा सकते हैं, और उसके भाषण में प्रेम का प्रभाव था। आप की बात से मुझे यह हैरान करने वाली बात भी पता चली कि इस्लाम और कुरआन विज्ञान के प्रति विरोधाभासी नहीं हैं, बल्कि वह संगत हैं और ब्रह्मांड की संरचना या बिग बैंग जैसे विषयों पर धर्म बात करता है।

वाटर हेलमुट शट ने कहा कि आपकी जमाअत इस युग में एक बहुत ही संगठित जमाअत है और मैं एसे उत्तम प्रबंध पर आप को मुबारकबाद देता हूं। सम्माननीय इमाम जमाअत अहमदिया ने एक दिल को प्रभावित करने वाला भाषण दिया जो पारंपरिक भाषण और बयानों से हटकर दिल से निकलने वाली तात्कालिक बात थी जो अन्य दर्शकों के विचारों को भी ख़ुद में समाई हुई थी। उन की इस बात से मैं सम्पूर्ण रूप से सहमत हूं कि लोगों के बीच शांति इस बात से जुड़ी हुई है धार्मिक नेता परस्पर एक दूसरे का सम्मान करें और परस्पर इज़्ज़त और सम्मान के द्वारा अशान्ति और घृणा को दूर करें।

गीज़न के डायरेक्टर स्कूल का कहना था कि मैं समारोह से पहले एसा सोचता था कि यूरोप में पिछली तीन शताब्दियों से आध्यात्मिकता पतनशील है और इमाम जमाअत अहमदिया की तकरीर से मेरे विचार सहमत हैं। आपके विश्लेषण का मेरा दिल भी पुष्टि करता है।

अक नया शादी शुदा जोड़ा दिस की लगभग एक सप्ताह पहले विवाह हुआ। मस्जिद के उद्घाटन समारोह में शामिल था। उन्होंने कहा कि ख़लीफा ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मस्जिद में ईसाईयों के साथ व्यवहार वर्णन किया था, यह बहुत दिलचस्प था। इसी तरह, ख़लीफा का शहर की मेयर के साथ मिलकर वृक्ष रोपण से बहुत प्रभावित हुए। लोगों के खुले दिल को व्यक्त करना बहुत अच्छा था इसी प्रकार, एकीकरण के बारे में जो ख़लीफा ने कहा है, वह बिल्कुल सही है। पुरुषों और महिलाओं के अलग-अलग कार्य होते हैं, और प्रत्येक काम वे इकट्ठा नहीं करते हैं, उनके बाथरूम भी अलग होती है। ख़लीफा एक सम्माननीय व्यक्ति हैं जो दूसरे लोगों के बहुत करीब हैं। हम आज के कार्यक्रम से बहुत ख़ुश हैं।

एक जर्मन मित्र, जो एक फाउंडेशन के प्रमुख हैं, यह फाउंडेशन एसे बच्चों और युवाओं की मदद करता है जो ग़रीब परिवारों के हैं उन्होंने कहा कि आज हमारे समाज में बहुत सारी एसी ताकतें और व्यक्ति हैं जो समाज को विभाजित करने का प्रयास करते हैं। ऐसे समाज में ख़लीफा जैसी आवाज़ का बहुत महत्व है क्योंकि वे समाज को सामंजस्य की शिक्षा देते हैं। मैं इस बात से बहुत प्रभावित हुआ हूं कि इस्लाम अन्य धर्मों के सम्मान और इज़्ज़त से व्यवहार कर ने और जुड़ने की शिक्षा प्रस्तुत करता है। जैसा कि ख़लीफा ने स्पष्ट किया।

श्री वोल्फगैंग मेननर मुख्य-तनुस काउंसिल के सदस्य हैं और उन का पहले से सम्पर्क फलोसहाइम के अहमदी दोस्तों से है। उन्होंने अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा कि मुझे ख़लीफा बहुत पसंद आए और उनके शब्द मेरे दिल तक पहुंचे हैं, और इन शब्दों ने मेरे दिल को ख़ुश कर दिया है, कि ख़लीफा के संदेश ने आज हमें सभी को अवगत कराया है मैं बहुत ही ख़ुशी में घर लौटूंगा के और उन्होंने कहा कि, इस्लाम वैसे तो अन्य धर्मों की तरह एक धर्म है, लेकिन जमाअत अहमदिया को यह स्पष्टता प्राप्त है , हो सकता है, कि शायद यह स्पष्टता उन्हें इस लिए प्राप्त है क्योंकि उनका एक ख़लीफा है यह ख़लीफा फिर सारे विश्व के अहमदियों को इकट्ठा करता है और उन्हें एक अच्छे रास्ते पर चलाता है और मुझे लगता है कि यह अन्य जमाअतों और धर्मों के बीच मुख्य अंतर है।

एक छात्र, जो शिक्षक बन रही है, अपने विचारों को वर्णन करते हुए कहती है, कि ख़लीफतुल मसीह ने आज यह स्पष्ट कर दिया है कि सभी शांति और प्यार से इकट्ठा रहें फिर ही समाज में शान्ति स्थापित की जा सकती है। ख़लीफा ने कहा था कि इस्लाम एक ख़तरनाक धर्म नहीं है, यह बिल्कुल सही कहा है। फिर ख़लीफा ने एकीकरण के बारे में जो कहा, इसका मतलब है कि एकीकरण का मतलब है कि वह देश जिस में रहते हैं, उस की सेवा की जाए उस में शान्ति से रहा जाए और उसका उपयोगी नागरिक बना जाए। यह बिल्कुल सही कहा है।

एक जर्मन महिला ने कहा कि ख़लीफा के सम्बोधन से मैंने बहुत कुछ सीखा है। यद्यपि मैंने पहले से ही इस्लाम के बारे में पर्याप्त जानकारी इकट्ठी की थी, मुझे अपने सभी प्रश्नों के जवाब आज मिल गए हैं।

एक और जर्मन महिला ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा कि यह कार्यक्रम बहुत अच्छा था। आप खुले दिल के लोग हैं इस्लाम की वास्तविक शिक्षा इसके ख़िलाफ है जो आज कल प्रसिद्ध है। ख़लीफा ने इस विरोधात्मक प्रोपगण्डा के विपरीत शान्ति की शिक्षा दिखायी।

एक 16 वर्षीय युवा ने अपनी भावनाओं का वर्णन करते हुए कहा, "मुझे यह पहले भी मालूम तो था कि इस्लाम कुछ ख़तरनाक चीज़ नहीं होगा, लेकिन बहुत से लोग ग़लत रूप से इस्लाम का उपयोग कर रहे हैं।" आज के इस प्रोग्राम ने दिखाया है कि इस्लाम शांतिपूर्ण और प्रेम का धर्म है। यह बात विशेष रूप से ख़लीफा में देखने को मिलती है।

एक जर्मन मित्र, जो जर्मन रोजगार एजेंसी के स्पोकस्मैंन हैं ,ने कहा, "मैं इस दावत का बहुत आभारी हूं और मुझे बहुत ख़ुशी है कि मैं इस कार्यक्रम में शामिल हो सकता हूं।" इस बात से बहुत ख़ुशी हुई कि मैं ख़लीफा को देख सका। मैं व्यक्तिगत रूप से तो नहीं मिल सकता था, लेकिन जिस तरह मैंने उन्हें देखा, मैं बहुत ख़ुश था।

एक डॉक्टर जिन का नाम गेरहार्ड मुलर है ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा, "मैं यहां आया और एक विशेष प्रेम की रूह को महसूस किया।" एक बात जिसे हम ख़लीफा से सीख सकते हैं, यह भी एकीकरण कैसे हो सकता है। वह घटना की जब ईसाई लोगों को मस्जिद में इबादत करने का समय दिया गया था जब उन्हें इबादत करने का समय दिया गया था और यह एक बात थी, औऱ यह एक एसी बात है जिसे मैं याद रखूंगा कि हम हर जगह इबादत कर सकते हैं। मेरी इच्छा है कि ईसाई चर्च भी इसी तरह से खुले दिल के हैं। विशेष रूप से मुसलमानों के लिए भी कि उन्हें चर्च में इबादत करने का अवसर भी देना चाहिए।

22 अगस्त 2017 ई(दिन मंगलवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने सुबह पांच बज कर पच्चीस मिन्ट पर पधार कर नमाज़ फजर पढ़ाई नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ अपने आवास पर गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ कार्यालय के

कामों में व्यस्त रहे। हुज़ूर अनवर ने विभिन्न देशों से प्राप्त होने वाली डाक और रिपोर्ट देखीं और हिदायतों से नवाज़ा।

फैमली मुलाकात

कार्यक्रम के अनुसार, ग्यारह बजकर बीस मिन्ट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अपने दफतर पधारे और परिवार के सदस्यों से मिलना शुरू कर दिया। आज सुबह के कार्यक्रम में, 58 परिवारों के 183 लोगों ने अपने प्रिय आक़ा के साथ मुलाकात की। इसके अलावा, 37 महिलाओं की भी मुलाकात हुई । इसके अलावा, पाकिस्तान और न्यूज़ीलैंड से आने वाले दोस्तों ने भी मुलाकात की है।

जर्मनी से मुलाकात करने वाले परिवार 40 अलग-अलग शहरों और जमाअतों से पहुंचे थे इनमें से कुछ परिवार एक लंबी यात्रा कर के आए थे ताकि अपने प्रिय आक़ा से मुलाकात कर सके।

इमाम हैसुम से आने वाले 200 किलोमीटर दूर से ,बाबलिनक से आने वाला 220 किलोमीटर, गोपंन से आने वाले 260 किलोमीटर की दूरी तय कर के पहुंचे थे। इसी तरह फ्रिडबर्ग से 290 किलोमीटर, अलम डोनौ से आने वाले 300 किमी और बर्लिन से 550 किलोमीटर दूर और लिबुक से आने वाली फैमलियां 600 किलोमीटर दूर का सफर तय कर के अपने प्यारे आक़ा से मुलाकात के लिए पहंची थी।

आज मुलाकात करने वाली फैमलियों में से बड़ी संख्या उन लोगों की थी जो पाकिस्तान से आई हुई थीं और अपने जीवन में पहली बार अपने प्यारे आक़ा से मिल रहे थे। ये सभी बहुत प्रसन्न थे कि उनके जीवन में एक दिन आया कि उन्हें अपने प्रिय आक़ा का क़रीब से दर्शन किया और उन्होंने अपने आक़ा के साथ कुछ क्षण बिताए वे उन की सारे जीवन का सरमाया हैं। उन में से प्रत्येक बरकतें समेटता हुआ बाहर आया। उनके कष्ट और परेशानियां आराम में बदल गईं।

पाकिस्तान से आने वाली फैमली जब मुलाकात कर के कार्यालय से बाहर आई, तो उनकी आँखें आँसूओं से भर गईं। कहने लगे कि पाकिस्तान में तो हम हुज़ूर को टेलीविज़न में देखते थे, आज अपने जीवन में पहली बार, हमने हुज़ूर को सामने बहुत निकट से देखा है, और हम कितने ख़ुश नसीब हैं कि कुछ क्षण हुज़ूर को निकट से देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और प्रत्येक की यही भावनाएं और प्रतिक्रियाएं थी।

मुलाकातों का यह कार्यक्रम दो बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ जुहर तथा असर जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों को पढ़ाने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने निवास स्थान पर पधारे। दूसरे समय भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला दफतरी कामों में व्यस्त रहे.

फैमली मुलाकात

कार्यक्रम के अनुसार छह बजकर 25 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय आए और परिवारों से मुलाकात शुरू हुई। आज शाम के इस सत्र में, 50 परिवार के 172 लोग अपने प्रिय आक़ा के साथ मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। प्रत्येक को हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनाने को सौभाग्य प्राप्त हुआ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने दया से शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट दिए। आज शाम कार्यक्रम में मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त करने वाले जर्मनी के 37 जमाअतों से आए थे जिन्होंने मुलाकात में भाग लिया था। इसके अलावा, पाकिस्तान के लोगों को भी मिलने का मौका मिला।

मुलाकातों का यह कार्यक्रम साढ़े आठ बजे तक जारी रहा इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

आमीन का समारोह

नौ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद हॉल में पधारे जहां कार्यक्रम के अनुसार आमीन के समारोह का आयोजन हुआ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने निम्न 27 बच्चों और बच्चियों से कुरआन एक एक आयत सुनी और अंत में दुआ करवाई प्रिय अलीम अहमद, शहाब ज़ाहिद, शिराज़ अहमद, लबीब अहमद ताहिर, रमीज़ अहमद, मुहम्मद हसीब खान, सजील अहमद , मुइज़ अहमद, तलहा यासिर, फातेह इयान अहमद, मुबश्शिर सानी बाजवा, काशिफ ताहिर, मिर्ज़ा यहया बशीर अहमद, अज़ीज़ा मलाइका खोखर, माहिद अहमद बट, आशिर हमीद, मलीहा शकील,युसरा हफीज, हिबतुल मालिक शाह सलाम, अनमूल ख़ालिद जफर, सामिया उमर, जन्नत फातिमा चीमा, अतयतुल अव्वल खान, ज़ोबिया हादिया अहमद, महरीन अहमद अरीहा अहसन, तमन चीमा।

आमीन के आयोजन का बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा कर के पढ़ाई।

नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने निवास में तशरीफ ले गए।

23 अगस्त 2017 (दिनांक बुधवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया: ने सुबह 5 बज कर 25 मिन्ट पर तशरीफ लाकर नमाज़ फज्र पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर पधारे। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ दफ़्तर के कामों में मामलों अनुकरण में व्यस्त रहे। हज़ूर अनवर ने दफतर की डाक, ख़त और रिपोर्टें देखीं। दुनिया के विभिन्न जमाअतों से फ़ैक्स और ईमेल पोस्ट और दैनिक रिपोर्टें प्राप्त होती हैं। इसके अलावा, जमाअत जर्मनी से सैंकड़ों दैनिक पत्र प्राप्त होते हैं जो ख़त जर्मन भाषा में होते हैं इन का अनुवाद हुज़ूर अनवर की सेवा में प्रस्तुत किया जाता है। हुज़ूर अनवर इन सभी पत्रों और रिपोर्टों को देखते हैं और मार्गदर्शन देते हैं।

फैमली मुलाकात

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ साढ़े 11 बजे अपने कार्यालय तशरीफ लाए और कार्यक्रम के अनुसार परिवारों से मुलाकात शुरू हुई। आज सुबह इस सत्र में 58 परिवारों के 176 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मिलने की सआदत पाई। मुलाकात करने वाले यह परिवार जर्मनी की 30 विभिन्न जमाअतों से आए थे। इसके अलावा भारत, पाकिस्तान, जाम्बिया, फ्रांस, ब्रिटेन, फ्रेंच गयाना, नाइजीरिया, बोर्कीना फासो, कोसोवो, संयुक्त अरब अमीरात, पुर्तगाल, स्विटजरलैंण्ड और तंज़ानिया से आने वाले मित्र और परिवार भी अपने प्यारे आक़ा से मिलने का सौभाग्य पाया। जर्मनी की जमाअतों नोरनबरग से आने वाले परिवार 250 कि.मी, ओसनाबरोक से आने वाले 320 किलोमीटर और वीचटा और वालडशट की जमाअतों से आने वाले परिवारों 380 किलोमीटर का लम्बा सफर तय कर के मुलाकात के लिए पहुंची थीं।

इन सभी परिवारों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने की सआदत पाई। हुज़ूर अनवर ने करूणा से शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट दीं। कितने ही ख़ुश नसीब यह फैमलियाँ हैं और उनके बच्चे और बच्चियां हैं जिन्होंने अपने प्यारे आक़ा के साथ यह कुछ क्षण व्यतीत किए और फिर हुज़ूर अनवर के मुबारक हाथों यह उपहार प्राप्त किए जो उनके जीवन के लिए एक यादगार बन गए। कुछ बच्चियां तो चॉकलेट का उपयोग करने के बाद उसका cover भी संभाल कर रखती हैं और बड़े बच्चे और छात्रों ने अपना कलम संभाल रखा है कि यह उनके जीवन भर के लिए एक यादगार उपहार है।

मुलाकातों का यह कार्यक्रम 2 बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ लाकर नमाज़ ज़ुहर और असर जमा करके पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ ले गए। पिछले पहर भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ दफतर के मामलों में व्यस्त रहे।

कार्यक्रम के अनुसार 6 बजकर 25 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय आए और परिवारों से मुलाकात शुरू हुई। आज शाम इस कार्यक्रम में 49 परिवारों के 195 लोगों को मुलाकात का सौभाग्य मिला। आज मुलाकात करने वाले यह परिवार जर्मनी की 30 विभिन्न जमाअतों से बैयतुस्सुबूह पहुंचें थे। कुछ मित्र और परिवार बड़ा लंबा सफर तय करके सौभाग्य प्राप्त करने के लिए पहुंचे थे। म्यूनिख से आने वाले 410 किलोमीटर और Schleswig के क्षेत्र से आने वाले 620 किलोमीटर का लम्बा सफर करके आए थे। जर्मनी की जमाअतों से आने वाली परिवारों के अलावा पाकिस्तान, रशिया, य ूऐ ई और ऑस्ट्रेलिया से आने वाले मित्रों ने भी अपने प्यारे आक़ा से मुलाकात का सौभाग्य पाया। इसके अलावा 16 पुरुषों और 9 महिलाओं ने व्यक्तिगत रूप से भी मुलाकात की सआदत पाई। मुलाकात करने वाले इन सभी मित्रों और परिवारों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर ने

करूणा से शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान किया। मुलाकातों का यह कार्यक्रम साढ़े 8 बजे तक जारी रहा।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

आमीन का समारोह

इस के बाद 9 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद के हॉल में तशरीफ लाए और कार्यक्रम के अनुसार आमीन का समारोह आयोजित हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ निम्नलिखित 24 बच्चों और बच्चियों से कुरआन की एक एक आयत सुनी और अंत में दुआ करवाई।

प्रिय ख़ाकान अहमद मलिक, फैज़ान बशीर नासिर, दानियाल अहमद नासिर, सदीद अहसन भट्टी, मुफीज़ अहमद मुनीब, फहद अहमद बासित, फहद इमरान, हमज़ा कादिर, तलहा वकार, अज़ीज़ा फातिहा अहमद, अमतुल सबूह, अमतुल अलीम, अदीलह ताहिर, साना तबस्सुम, मुनीफह हलीम भट्टी, जज़बिया नुदरत, आसफह जावेद, सोफिया अरूश अहमद, मदीहा अहसन, नबीहह जावेद, नोरम ख़ान, अत्तयतुल कय्यूम, बसमअ ज़फर, अतयतुल वदूद,

आमीन के समारोह के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब और इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

मस्जिद बैयतुस्समद के उद्घाटन समारोह की मीडिया कवरेज

मस्जिद बैयतुस्समद गीज़न के उद्घाटन की इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया में व्यापक पैमाने पर कवरेज हुई। निम्नलिखित मीडिया ने कवरेज दी: ZDF (Drehscheibe) (नेशनल टी वी चैनल) HR Hessen Schau (टी वी चैनल) Giessener Allgemeine Zeitung (अख़बार) Giessener Anzeiger (अखबार)

* ZDF टी वी ने 22 अगस्त को करीब साढ़े 3 मिनट खबर प्रसारित की। माननीय ख़लीफा लंदन से उद्घाटन के लिए आए। इस दिन अहमदियों के लिए एक विशेष दिन है। समय के ख़लीफा ने नमाज़ पढ़ाई। जमाअत अहमदिया कई देशों में अत्याचार का शिकार है क्योंकि संस्थापक जमाअत अहमदिया ने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार आने वाले मसीह होने का दावा किया। समय के ख़लीफा ने एक पौधा भी लगाया। ख़लीफा ने मुस्लिम आतंकवादियों के बारे में रुख़ स्पष्ट करते हुए कहा कि हम भी मुसलमान अतिवादियों के ख़िलाफ हैं। ये लोग इस्लाम की सही तस्वीर पेश नहीं कर रहे। अहमदिया जमाअत सख्ती से पुरुषों और महिलाओं में अलग शिक्षा का पालन करती है। ख़लीफा ने कहा कि महिलाओं की भूमिका अंटी गरेशन का केन्द्रीय बिंदु नहीं है। बल्कि वास्तविक एंटी गरेशन यह है कि आप अपने देश से प्यार करें और नियमों का पालन करें। पुरुषों और महिलाओं में जमाअत में विभाजन का पालन किया जाता है। लेकिन वैज्ञानिक डॉक्टर, व्यापार आदि कार्यों में मर्दों के साथा काम करती हैं।

* Hessenschau टेलीविजन में 21 अगस्त की खबरों में लगभग 35 सैकंड खबर प्रसारित हुई। गीज़न में अहमदिया मुस्लिम जमाअत की यह पहली मस्जिद का उद्घाटन हुआ। यह मीनार और गुंबद वाली मस्जिद है। उद्घाटन के लिए लंदन से ख़लीफा तशरीफ़ लाए। 7 लाख यूरो की लागत केवल जमाअत के लोगों के चंदा से हासिल हुआ है।

*अख़बार Gissener Anzeiger ने अपनी 22 अगस्त प्रकाशन में लिखा: ख़लीफा ने गीज़न सभी लोगों का शुक्रिया अदा किया, जिन्होंने मस्जिद निर्माण का समर्थन किया। पड़ोसियों के अधिकार उनके लिए महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने निर्माण के दौरान होने वाले शोर के लिए क्षमा याचना मांगी, और बताया कि मुस्लिम समुदाय का उद्देश्य युद्ध के बजाय प्रेम और सामंजस्य फैलाना है। उनका माटो मुहब्बत सब के लिए नफरत किसी से नहीं है। एकीकरण बहुत महत्वपूर्ण है पुरुषों और महिलाओं में समानता, मुस्लिम महिलाओं ने भी एक अलग कमरे में समारोह देखा। इस्लाम में अलग-अलग नियम हैं जो लागू होते हैं। उन्होंने कुछ समय पहले लार्ड लेडी के साथ वृक्ष को पानी दिया। यह एकीकरण का संकेत था

*अख़बार Gissener Allgemeine ने अपनी 22 अगस्त प्रकाशन में लिखा: ख़लीफतुल मसीह लंदन में रहते हैं और मस्जिद के उद्घाटन के लिए गीज़न तशरीफ लाए हैं। ZDF के कुछ सवालों के जवाब देने के बाद और एक पेड़ लगाने के बाद प्रोग्राम के लिए तशरीफ ले गए जहां 500 मेहमान कार्यक्रम के लिए आप का इंतजार कर रहे थे। प्रबंधन में बहुत मेहनत की गई थी। प्रत्येक मेहमान के लिए अनुवाद का प्रबंधन और उपहार भी शामिल है। मस्जिद का निर्माण भी बहुत आश्चर्यचकित तेज़ी से हुआ था। एक साल में ही गीज़न की पहली मस्जिद तैयार हो गई । इस के साथ, ख़लीफा ने कहा कि जमाअत पहले से अधिक शहर के लक्ष्य में आ गई है। ख़लीफा ने ज़ोर दिया कि अहमदिया जमाअत में महिलाएं कई प्रमुख भूमिका निभाती हैं पुरुषों और महिलाओं में पृथक एक धार्मिक तरीका है, लेकिन एंटीग्रेज़न के विरोधी नहीं है। हमारी जमाअत में औरतें पुरुषों से अधिक शिक्षित हैं, ख़लीफा ने चरमपंथियों की निंदा करते हुए कहा कि एक असली मुसलमान के लिए यह कर्तव्य है कि वह शांति के लिए काम करे। मुहब्बत सब के लिए नफरत नहीं करता है इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया द्वारा मस्जिद के खुलने की ख़बर 16 लाख 52 हज़ार लोगों तक पहुंच गई।

24 अगस्त 2017 (दिन गुरुवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 5 बजकर 25 मिनट पर तशरीफ़ लाकर नमाज़े फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ दफतर की डाक, पोस्ट और रिपोर्ट देखने में व्यस्त रहे और निर्देश से नवाज़ा और विभिन्न दफतरी मामलों में मार्ग दर्शन फरमाया।

2 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ नमाज़ ज़ुहर असर के पढ़ने के लिए पधारे।

नमाज़ ज़नाज़ा हाज़िर तथा ग़ायब

नमाज़ों के अदा करने से पहले हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने निम्निलिखित दो मरहूमीन की नमाज़ जनाज़ा हाज़िर और एक मरहूम की नमाज़ जनाज़ा गायब पढ़ाई।

(1) आदरणीय फज़ल इलाही ताहिर की नमाज़ जनाज़ा हाज़िर पढ़ाई। आप 22 अगस्त 2017 ई को कुछ बीमारी के कारण अल्लाह तआला के अदेशानुसार मृत्यु को प्राप्त हुए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। मरहूम मूसी थे और हज़रत मियां क्रीम बख्श साहिब नंगली सहाबी हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पोते थे। मरहूम अपने व्यवसाय के सिलसिले में एक लंबे समय से फैसलाबाद में रहते थे और वहाँ के उप नाज़िम तरबियत क्षेत्र फैसलाबाद सेवा करते रहे थे।

(2) आदरणीया कुलसूम बेगम सहिबा (जर्मनी) की नमाज़ जनाज़ा हाज़िर पढ़ाई है। 88 वर्ष की आयु में एक बीमारी के बाद 23 अगस्त 2017 को अल्लाह तआला के आदेश से निधन हो गया। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। स्वर्गीया वित्तीय कुरबानीों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने वाली थीं अपने विवाह से पहले ही वसीयत के निज़ाम में शामिल हो गई थीं।

(3) आदरणीय ईदरीस अहमद चौधरी (जर्मनी) की नमाज़ जनाज़ा ग़ायब पढ़ाई इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। मरहूम ने 13 अगस्त 2017 ई वफात पाई । इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। आप को अल्लाह तआला के फज़ल से पिछले 14 सालों से Segeberg सेवा की तौफीक मिली। आप एक ईमानदार और सक्रिय कार्यकर्ता थे। हमेशा विभिन्न क्षेत्रों में सेवा में हाज़िर रहते। जरूरत मंदों के लिए चित्रित और उन की सहायता के लिए हमेशा काशिश करते। अल्लाह तआला मरहूम के स्तर को बढ़ाए। आमीन।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने मरहूमीन के वारिसों से संवेदना व्यक्त की और हाथ मिलाया। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई। इसके बाद हुज़ूर अनवर मस्जिद के हॉल में पधारे और नमाज़ ज़ुहर और असर जमा करके पढ़ाई नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

Karlsrushe के लिए प्रस्थान

आज कार्यक्रम के अनुसार, कार्लज़ूए के लिए प्रस्थान था रैली के लिए प्रस्थान 5 बजकर 35 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास से बाहर आए और दुआ करवाई और कारवां Karlsruhe शहर की ओर रवाना हुआ। बैयतुल सुबूह फ्रेनकफूर्ट से कारलज़ूए शहर की दूरी 160 किलोमीटर है यह जगह जहां जलसा का आयोजन होता है K. Messe कहलाती है। इसका कुल क्षेत्रफल 150,000 वर्ग मीटर है और इसका कवर भाग 70 हज़ार

वर्ग मीटर है। इसमें चार बड़े हॉल हैं और इसमें चार-हॉल एयर कंडीशनिंग है। प्रत्येक हॉल का क्षेत्रफल 1250 वर्ग मीटर है और हर हाल में कुर्सियों पर 12 हज़ार लोग बैठ सकते हैं और हर हाल में 18 हज़ार से अधिक लोगों नमाज़ अदा कर सकते हैं। कुल मिलाकर, चार हॉल से जुड़े 128 बाथरूम हैं। इस क्षेत्र के अलावा कार्यालय और कई छोटे दफ्तर हैं। वहां 10 हज़ार वाहन पार्किंग की जगह है लगभग 2 घंटा यात्रा के बाद 7 बजकर 35 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ सभा स्थल पर तशरीफ़ लाए। जलसा सालाना के प्रशासन ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ का स्वागत किया। जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ मार्की के अंदर आए तो कार्यकर्ताओं ने बड़े रोमांचक तरीके में नारे लगाए।

जलसा सालाना के प्रबन्ध का निरीक्षण

कार्यक्रम के अनुसार जलसा सालाना का निरीक्षण हुआ। नायब अफसरान जलसा सालाना एक पंक्ति में खड़े थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ दया से उन के पास से गुज़रे और अपना हाथ ऊंचा कर के अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह कहा। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज ने सब से पहले सुरक्षा संचालन केंद्र का निरीक्षण किया, जहां जलसा सालाना के विभिन्न स्थानों में स्थित सुरक्षा कैमरे के द्वारा सभी प्रमुख भागों की निगरानी की जा रही है। इस प्रकार, सुरक्षा की दृष्टि से जलसा सालाना के प्रत्येक क्षेत्र की निगरानी की जा रही थी।

इस के बाद हुज़ूर अनवर स्केनिंग सिस्टम के पास से गुज़रते हुए एमटीए इंटरनेशनल विभाग प्रोग्रामिंग और एडीटिंग सिस्टम में पधारे। इस क्षेत्र के प्रबंधन के अधीन, निम्नलिखित फ़ील्ड में काम कर रहे हैं: ऑफ़लाइन, संपादन, ग्राफिक्स, सोशल मीडिया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने प्रबंधकों से कुठ बातों के बारे में पूछा।

इस के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ी ने मुख्य हॉल के बाहर लगी हुई मार्की में अनुवाद विभाग का दौरा किया, जहां विभिन्न भाषाओं के विभिन्न कार्यक्रमों और सभी भाषाओं में लाइव अनुवाद का आयोजन किया गया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ एम.टी.ए इंटरनेशनल की उस वैन में भी तशरीफ ले गए जिस में साइड ब्राइड कास्ट यूनिट लगाई गई है।

उसके बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़, स्टोर के पास से गुज़रे जहां विभिन्न खाद्य पदार्थों और वस्तुओं को जमा किया गया था। यहां से आवश्यकता के अनुसार यह वस्तुएं विभिन्न क्षेत्रों में भी उपलब्ध कराई जाती हैं। हुज़ूर अनवर ने प्रबंधकों से कुछ वस्तुओं के बारे में पूछा।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने लंगर ख़ाने का निरीक्षण किया और खाना पकाने का प्रबन्ध का निरीक्षण किया। सब से पहले हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने मांस की कटाई की समीक्षा की और एक विशिष्ट टेम्परेचर पर इसे बचाने की समीक्षा की। एक कंटेनर फ्रीजर जैसा प्राप्त किया गया है जिसमें टनो के हिसाब से मांस को रखा जा सकता था।

इसके बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने लंगर ख़ाने का निरीक्षण किया और भोजन की व्यवस्था की समीक्षा की और भोजन की गुणवत्ता को देखा। दाल और आलू का सालन पका हुआ था और साथ ही वह रोटी भी रखी हुई थी जो मेहमानों को दी जानी थी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ी ने कुछ लुकमे लेकर खाया और इस बात की समीक्षा की कि दोनों सालन सही पके हैं या नहीं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने भोजन की गुणवत्ता के बारे में आयोजकों से बात की। लंगर ख़ाने के श्रमिकों ने बड़े आकार का एक केक तैयार किया हुआ था हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए अपने इन ख़ुद्दाम के लिए केक के कई टुकड़े किए। इस के बाद, लंगर के श्रमिक अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया। लंगर ख़ाने के बाहर एक वाशिंग मशीन स्थापित की गई थी। यह मशीन पिछले 10 वर्षों से लगाई जा रही है और प्रत्येक वर्ष इस में सुधार किया जा रहा है। यह मशीन अहमदी इंजीनियर्स ने मिल कर तैय्यार की है। शुरू में यह ऐसा मामला था कि मशीन पर दबाव डालने के बाद, एक बटन दबाना पड़ता था, लेकिन अब यह बटन दबाना नहीं पड़ता है, जैसे ही देगें सफाई के लिए रखी जाती हैं स्वचालित रूप से मशीन काम करना शुरू कर देती है। एक एसी संवेदक प्रणाली स्थापित की गई है, जो आसानी से काम कर रही है और धोने की प्रक्रिया पूरी होने पर देग अपने आप बाहर आ जाती है। इस मशीन पर काम कर रहे सेवक एक पंक्ति में मशीन के पास खड़े थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए अपना हाथ उंचा कर के इन सब के अस्सलामो अलैकुम वरहमुतल्लाह कहा।

लंगर ख़ाना के पास ही एक अलग तम्बू लगा कर, मेहमानों के लिए व्यापक रूप से चाय तैयार करने के लिए व्यवस्था की गई थी। हुज़ूर अनवर ने इस व्यवस्था के बारे में आयोजकों से पूछा। इसके बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ प्राइवेट तम्बूओं के सेहन में पहुंचे और तंबूओं के बीच के रास्ते से गुज़रे। रास्ता के दोनों तरफ जर्मनी के विभिन्न स्थानो और शहरों से आने वाली फैमिलियां अपने-अपने ख़ेमों के पास खड़ी थीं और कुछ अपने ख़ेमे लगा रही थीं. सभी ने अपने हाथ उंचे कर के हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह को सलाम निवेदन किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ अपनी हाथ उंचा कर के सब के सलाम का जवाब देते रहे। और कुछ फैमिलयों से बातें भी कीं, चारों तरफ से लोग निरन्तर नारे भी लगा रहे थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए कुछ फैमलीज़ से उन के ख़ेमों के साइज़ के बार में पूछा कि इस में कितने आदमी आराम से आ सकते हैं।

निजी तम्बू आवरण के एक तरफ, एक निजी भाग कारवान के लिए आरक्षित किया गया था। इन टेंट और कारवां के आस पास बाड़ भी लगाई गई थी और इस के गेट भी बनाए गए हैं और पंजीकरण, कार्ड चेकिंग और स्कीइंग के बाद ही प्रवेश किया जा सकता है।

इस के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ जलसा गाह में तशरीफ ले गए और लजना की व्यवस्था का निरीक्षण किया और उनकी व्यवस्था को देखा और विभिन्न क्षेत्रों की समीक्षा की और निर्देश दिए। लजना जलसा की व्यवस्था के लिए नाज़िमा आला के अधीन 12 नायब नाज़मात हैं। इसी प्रकार, विभिन्न क्षेत्रों के लिए नाज़मात की संख्या 64 है और डिप्टी नाज़मात की संख्या 339 है। प्रशासनिक विभागों की संख्या 65 है मुअवनात करने वालों की संख्या 2658 है इसी तरह 2658 महिलाएं और लड़कियों ने लजना की तरफ से ड्यूटी के कर्तव्यों को अदा किया था। लजना की व्यवस्थाओं के निरीक्षण के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने एम.टी.ए स्टूडियो और अन्य संबंधित व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया और कुछ मुद्दों पर इसका उल्लेख किया।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने किताबों के स्टोरों और स्टालों का निरीक्षण किया। यहां, किताबें टेबलों पर बड़े क्रम में रखी गई थीं, ताकि पुस्तकों को लेने वाले अपनी वांछित किताबें प्राप्त कर सकें। प्रकाशन के सैक्रेटरी, ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ की सेवा में कहा कि "हदीकतुस्सालेहीन का जर्मन अनुवाद भी प्रकाशित हो चुका है। इसी तरह, किताब हयाते तैय्यबा का जर्मन अनुवाद भी प्रकाशित किया गया है। हुज़ूर

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 2 Thursday 30 November 2017 Issue No. 48

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 300/- Per Issue: Rs. 6/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने इन दोनों किताबों का निरीक्षण फरमाया

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने ह्यूमेनटी फ़र्स्ट का निरीक्षण भी किया। अफ्रीका में स्वच्छ पानी के उपयोग के लिए जो नल और पंप लगाए गए उन को तस्वीरों में दिखाया गया था। एक हाथ पंप व्यावहारिक रूप से भी लगाया था। ह्यूमेनटी फ़र्स्ट के अध्यक्ष डॉ अतहर ज़ुबैर ने पानी निकाल कर दिखाया। हुज़ूर अनवर ने ह्यूमेनटी फर्स्ट जर्मन के स्टॉल पर मौजूद विभिन्न सामानों के बारे में पूछा, और यहां से, एक नियमित मूल्य की वस्तुएं कीमत अदा करके खरीदीं।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने जमाअत अहमदिया जर्मनी के स्टाल के हवाले से पूछा कि जामिया वाले क्या कर रहे हैं। इस पर स्टाल के प्रबंधक ने कहा कि जामिया के बारे में सम्पूर्ण मालूमात और जानकारी दी जाती है और जामिया में दाख़िला के बारे में मार्ग दर्शन दिया जाता है। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने पूछा कि यहां कौन से विभागों के दफ़्तर स्थापित किए गए हैं। इस पर अमीर साहिब जर्मनी ने बताया कि विभाग वसीयत, विभाग रिश्ता नाता, विभाग अमूरे आम्मा, विभाग निर्माण 100 मस्जिदें, विभाग समीअ तथा बसरी, विभाग शिक्षा, पुस्तक स्टाल, विभाग ख़ुद्दाम CAFE और विभाग कार्ड तैय्यारी ग्रीन यहां स्थापित किए गए हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ विभाग निर्माण 100 मस्जिदों के कार्यालय में तशरीफ ले गए। यहां जर्मनी में निर्मित सभी मस्जिदों की तस्वीरें बहुत सुन्दर तरीके से लगाई गई थीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने सैक्रेटरी साहिब संपत्ति से निर्माणाधीन मस्जिदों के बारे में पूछा और कुछ मामलों से संबंधित मार्गदर्शन दिया। जलसा सालाना के विभिन्न व्यवस्थाओं के निरीक्षण के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ मर्दाना जलसा गाह में पधारे। जहाँ कार्यक्रम के अनुसार जलसा सालाना की डयूटयों का उद्घाटन समारोह था। सभी नाज़मीन अपने सहयोगियों और श्रमिकों के साथ क्रम में बैठे थे।

अफसर जलसा सालाना, असफर जलसा गाह और अफसर ख़िदमते ख़लक के अतिरिक्त नायब अफसरान की संख्या 12 है नाज़मीन की संख्या 71 है। नायब नाज़मीन की संख्या 255 है और सहायकों की संख्या 6978 है इस तरह कुल 75 92 पुरुष और महिला बच्चे ड्यूटी दे रहे हैं। लजना की काम करने वालियों को शामिल कर के कुल संख्या 10250 है।

समारोह की शुरुआत कुरआन से हुई जो आदरणीय नूरुद्दीन अशरफ साहिब छात्र जामिया अहमदिया जर्मनी ने की इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह ने ख़िताब फरमाया।

ख़िताब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला निरीक्षण कार्यकर्ता जलसा सालाना जर्मनी 2017

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने तशह्हुद तऊज़ और तसमिया के बाद फरमाया कि अल्लाह तआला के फज़ल से जर्मनी जमाअत को एक और जलसा आयोजित करने की तौफ़ीक़ मिल रही है। जलसा में शामिल होने वाले लोगों की संख्या बढ़ रही है जिस प्रकार श्रमिकों की संख्या बढ़ रही है। बल्कि, कुछ नए विभाग बनाए गए हैं जो पहले नहीं थे और उन के लिए भी अब काम करने वाले उपलब्ध हो जाते हैं। यह अल्लाह तआला का जमाअत पर एक विशेष फज़ल है कि नि:स्वार्थ कार्यकर्ता जो अल्लाह तआला और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा के लिए उपलब्ध करवा देता है। एक समय था जब यह ज़रूरत थी कि कैसे कर्मचारियों को अपने विभागों के लिए प्रशिक्षण दिया जाएगा और उन्हें कैसे ट्रेंड किया जाए लेकिन अब अल्लाह तआला के रहम से कार्यकर्ताओं का जहां तक सवाल है तो हर विभाग के कार्यकर्ता, नाज़िम और सहायकों और कार्यकर्ता तो विशेष रूप से अपने-अपने क्षेत्र में विशेषज्ञ हैं, और क्योंकि नीयत नेक है, ईमानदारी से सेवा करने की भावना है इस लिए अल्लाह तआला मदद करता है और बड़े उच्च रंग में उन्हें सेवा की तौफ़ीक़ अता फरमाता है।

इतनी बड़ी प्रणाली में, यदि कोई सांसारिक प्रणाली है, तो उस के लिए उन लोग को जमा किया जाता है जो इस काम के विशेषज्ञ हैं। लेकिन यहां ऐसे काम करने वाले जो सारा साल विभिन्न काम करते हैं कोई डॉक्टर है, कोई इंजीनियर है, कोई छात्र है और कोई अन्य काम कर रहा है कोई टैक्सी चला कर रहा है। तो ये सभी कुछ क्षेत्रों में विशेषज्ञों की तरह काम कर रहे होते हैं तो यह वह भावना है जो अल्लाह तआला ने इस युग में केवल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत के लोगों को प्रदान की है।

अत: इस दृष्टि से तो कोई फिक्र करने वाली बात नहीं कि काम करने वाले सेवक नहीं हैं। हां फिक्र इसलिए कई बार पैदा होती है कि सहायक और काम करने वाले तो सेवा भावना से काम कर रहे होते हैं और नि:स्वार्थ काम कर रहे होते हैं परन्तु अफसरों में सेवा भावना होनी चाहिए। और इस के लिए सहयोग होना चाहिए। अभी जो तिलावत की गई तो अल्लाह तआला ने इस में भी बिल्कुल यही फरमाया है कि मोमिनों को अल्लाह तआला इकट्ठा करना चाहता है ताकि वे एक हो कर काम करें। अल्लाह तआला ने कुरआन करीम में काफिरों का यह निशानी वर्णन फरमाई है कि(59:15) وَّ قُلُوْبُـهُمْ شَـتّٰى कि उनके दिल फटे हुए हैं परन्तु एक मोमिन की निशानी तो यह नहीं है मोमिन के दिल तो आपस में मुहब्बत और प्यार से जुड़े होते हैं अत: अफसर भी अगर प्यार और सहयोग तथा मुहब्बत से एक दूसरे को समझते हुए काम करें तो उन के कामों में बहुत अधिक बरकत पड़ेगी। जो बरकत पड़ती है वह उन के गुणों के कारण से नहीं पड़ती। इस विचार को अफसरों को अपने दिलों से निकाल देना चाहिए। अगर बरकत पड़ती है तो इसलिए कि अल्लाह तआला ने यह ज़िम्मा लिया हुआ है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा के लिए सेवक पैदा करने हैं। और वह सेवकों के दिल में डाल देता है कि चाहे अच्छा अफसर हो या बुरा अफसर मेहनत करने वाला हो या न मेहनत करने वाला हो एक मशीन के पुरज़ों की तरह जिन को एक बार किसी काम पर लगा दिया जाए तो उस पुर्ज़े का काम है कि उसी तरह चलते जाना अत: इसी तरह प्रत्येक विभाग में सेवा करने वाले काम करते चले जाते हैं।

तो आज मैं सेवा करने वालों को कुछ नहीं कहना चाहता हूं क्योंकि मुझे पता है कि उन्हें एक जुनून है और वे काम करेंगे जो उन्हें दिए जाएंगे। इंशा अल्लाह तआला। हमें जो ज़रूरत है वह यह कि अफसर भी आपस में आपसी सहयोग से काम लें और यह आपसी सहयोग जो है वह काम में बरकत भी डालेगा और उन्हें भी इनाम का पात्र बना देगा। और अगर आप से कोई सहयोग नहीं है तो दुश्मन भी इसका लाभ उठाने की कोशिश करता है। इसलिए, प्रत्येक क्षेत्र का जो अधिकारी है उसे ऊपर से नीचे तक सोचना चाहिए कि हमें एक-दूसरे के साथ मिल कर एक दूसरे के साथ सहयोग करना होगा। अल्लाह तआला हम सब को इस की तौफीक प्रदान करे। दुआ कर लें।

ख़िताब के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। इस के बाद कार्यक्रम के अनुसार नौ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब व इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अपने निवास जाते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने नुमायश का निरीक्षण किया।

इस्लाम और कुरआन के नाम से प्रदर्शनी लगाई गई थी। तब्लीग़ प्रदर्शनी के अलावा, रिव्यू आफ रिलीजनस (जर्मन) के स्टाल को भी शामिल किया गया है। इस प्रदर्शनी के साथ अलग हिस्सा में, एम.टी ए इंटरनेशनल (लंदन) ने भी अपनी प्रदर्शनी का आयोजन किया है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआाल बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने दया से इस प्रदर्शनी को भी देखा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपने आवासीय भाग में पधारे। जलसा के दिनों में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ का निवास जलसा गाह के अंदर ही एक आवासीय भाग में था।

(शेष.....)

(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad